भजन 39

इतनी मेहर करना मेरे सतगुरू, जब प्राण तन से निकलें
साहिब नाम लेते लेते, मेरी जान तन से निकले – 2

1 मानसरोवर का ही तट हो, मेरी सुरति तुम में बस हो
मेरा साहिब मेरे निकट हों, जब प्राण तन से निकलें .... इतनी मेहर करना –

2 मेरे सन्मुख सतगुरू खड़ा हो, उसके हाथ में मेरा हाथ हो
तेरा दर्शन हर पल पल हो, जब प्राण तन से निकले .... इतनी मेहर करना –

3 जब अंतिम मेरा पल हो, हर श्वांस में सार सब्द हो
सुरति में प्रेम का रस हो, जब प्राण तन से निकलें .... इतनी मेहर करना –

4 साहिब ये ही मेरी अर्ज़ है, मानों तो क्या हर्ज है
हर श्वांस में तुम मेरे संग हो, जब प्राण तन से निकले .... इतनी मेहर करना –

5 तुम सुरति सूं ले जाना, हंसों के देस पहुंचाना
चरणों में तेरे मेरा घर हो, अब जीव जन्म मरन से निकले ....इतनी मेहर करना –

इतनी मेहर करना मेरे सतगुरू, जब प्राण तन से निकलें
साहिब नाम लेते लेते, मेरी जान तन से निकले – 2

–0–

ग

भजन 40

पायो जी मैनें पूर्ण सतगुरू पायो, पायो जी मैनें पूर्ण सतगुरू पायो ।

1 पित्र पिण्ड पे संकट बन आयो, पल में पीड़ भगायो। पायो जी मैनें –

2 दो पल में पूर्ण संत मिलायो, जो सतलोक की महिमां गायो। पायो जी मैनें –

3 सतनाम की गेंद दे कर, हमको जन्म मरन से छुड़ायो। पायो जी मैनें –

4 मोहे सत्संग मार्ग दर्श करायो, जिज्ञासा ओर बड़ायो। पायो जी मैनें –

5 पूर्ण संत मोक्ष राज़ बतायो, कैसे आत्म हंसा बन पायो। पायो जी मैनें –

6 दे अमृत रस मीरां बनायो, प्रेम से आत्म जगायो। पायो जी मैनें –

7 राम नाम सूं धनी बनायो, मौक्ष राह बतायो। पायो जी मैनें –

पायो जी मैनें पूर्ण सतगुरू पायो, पायो जी मैनें पूर्ण सतगुरू पायो ।

–0–

भजन 41

ईबादत करने दे मुझको, मैनें पाना है तुझको – २

1 कंई जन्म मैनें हैं काटे, बस पाने को तुझको। ईबादत करने दे –

2 अब रहना ना यहां मुझको, मैनें पा लिया तुझको। ईबादत करने दे –

3 सतलोक जा के इस पल, मैनें पाना साहिबन को। ईबादत करने दे –

4 पा लिया है सब कुछ, अब कुछ चाह नहीं मुझको। ईबादत करने दे –

5 कंई जन्म हैं मैने काटे, तब सतगुरू मिले हैं मुझको। ईबादत करने दे –

6 सतगुरू के संग अब, निजघर जाना है मुझको। ईबादत करने दे –

7 वो प्रीतम हैं मेरे, उन से प्रीत मिली मुझको। ईबादत करने दे –

ईबादत करने दे मुझको, मैनें पाना है तुझको – २

–0–

भजन 42

मेरे साहिब नहीं हैं दूर, मेरे साहिब नहीं हैं दूर।

1 जैसे सुहागिन, मांग में भरती है सिंदूर । मेरे साहिब –

2 प्रेम की माला पहना कर, कर दिया है मुझको पूर । मेरे साहिब –

3 तुझसे मिलकर पा लिया है, भक्ति का सारा नूर । मेरे साहिब –

4 दास बन के कर दिया, नशा जग का चूर । मेरे साहिब –

5 सार सब्द देकर कर दिया, मन माया से दूर । मेरे साहिब –

6 सतगुरू मुझको दे के सहारा, कर दिया भव पार । मेरे साहिब –

मेरे साहिब नहीं हैं दूर, मेरे साहिब नहीं हैं दूर।

–0–

भजन 43

तुझ बिन मुझ को चैन ना आवे,
कैसे कटेगी रैन साहिब जी कैसे कटेगी रैन।

1 बन मनी लोहा हीरा बनाया, प्रेम की वर्षा । साहिब जी –

2 जन्म जन्म के बंधन काटे, दे के हमको सार नाम । साहिब जी –

3 पाप पुण्य भेद तूने मिटाया, कर दी आत्म चेतन । साहिब जी –

4 हर पल मेरी सांस में रहते, जैसे सूरज में तेज । साहिब जी –

5 हर पल मेरी ख़बर हो रखते, जैसे माँ नवजात । साहिब जी –

तुझ बिन मुझ को चैन ना आवे,
कैसे कटेगी रैन साहिब जी कैसे कटेगी रैन।

–0–

भजन 44

मोहे साहिब मिलन की आस, मोहे साहिब मिलन की आस।

1 मंदिर मस्जिद में ढूंढयो, कहीं भुजी ना प्यास,
पूर्ण संत को जानेया, सतपुरूष पायो पास । मोहे साहिब –

2 मेरे प्यारे सतगुरू, जो घूमें बन के दास,
ना वो बसें काशी में, नांहि वो कैलाश,
वो तो बसते हैं, पूर्ण विश्वास में। मोहे साहिब –

3 इन नैनों को बंद करूं, तो पाऊँ उन्हें पास,
नैन खुले तो, सारा अंबर उनका वास । मोहे साहिब –

4 दर्द ह्रदय में उठता, और कुछ ना आवे रास,
रात को उठ उठ जागूं, जब पाऊँ ना उनको पास । मोहे साहिब –

5 जन्म जन्म की प्यास भुजी, आके सतगुरू द्वार,
सार नाम से मन माया का, किया उसने नाश । मोहे साहिब –

मोहे साहिब मिलन की आस, मोहे साहिब मिलन की आस।

–0–

भजन 45

ओ साहिबा मोरे, अब तो पधारो मारे देस,
ओ साहिबा मोरे, अब तो पधारो मारे देस।

1 नैनन नूं चैन ना आवे, तूं बैठा परदेस । ओ साहिबा मोरे –

2 पत्तियां लिख लिख कैसे भेजूं, करूं पीड़ उल्लेख । ओ साहिबा मोरे –

3 पीड़ा मेरी बड़त जात है, किस को सुनाऊँ अपना क्लेश । ओ साहिबा मोरे –

4 धन्य हो गई मैं तो, जन्म जो पाई सतगुरू देस । ओ साहिबा मोरे –

5 पूर्ण संत पा, मिटा मोरा सारा क्लेश । ओ साहिबा मोरे –

6 प्रीत प्रेम विश्वास से भरा, सतगुरू प्रेम संदेश । ओ साहिबा मोरे –

ओ साहिबा मोरे, अब तो पधारो मारे देस,
ओ साहिबा मोरे, अब तो पधारो मारे देस।

–0–

भजन 46

सांसों की माला पे, सिमरूं मैं साहिबन नाम,
सांसों की माला पे, सिमरूं मैं साहिबन नाम।

1 प्रीत की माला रटते रटते, हो गई मीरा घनश्याम,
सत नाम की माला पहन के, पाऊँ मैं निजधाम । सांसों की माला –

2 साहिब की जो प्रीत मिली, हो गई मैं धनवान,
इस प्रीत प्रेम संग, जाना है निजधाम । सांसों की माला –

3 साहिब मेरे प्राणों से प्यारे, करते जगत कल्याण,
प्रेम प्रीति के बड़ते बड़ते, पाई मैं आत्म ज्ञान । सांसों की माला –

4 साहिब मिलन का है, अब तो ईन्तज़ार,
कब जाऊँ कब पाऊं, हो जाऊँ अंतर ध्यान । सांसों की माला –

5 बड़ती प्यास कैसे भुजाऊँ, दिन दिन बड़ती जात,
साहिब मेरे रखते हैं, मेरा हर पल ध्यान । सांसों की माला –

सांसों की माला पे, सिमरूं मैं साहिबन नाम,
सांसों की माला पे, सिमरूं मैं साहिबन नाम।

–0–

भजन 47

मेरे साहिबा मेरे साहिबा मेरे विधाता के रंग विच रंग गई आं – २

1 प्रीत जो तेरी मुझ संग लागी, थी मैं बड़ी भाग्यशाली,
बिन मांगे सब पा गई रे। मेरे साहिब मेरे – २

2 वादा सी तेरा साथ रहां गा, पल पल तेरे पास रहां गा,
बस गये मेरे दिल विच मेरे। मेरे साहिब मेरे – २

3 सांसों में मेरे हर पल रहता, आत्म बन हंसा मुझसे कहती,
प्रीत से तेरी जागी रे। मेरे साहिब मेरे – २

4 तुझ बिन अब तो कुछ ना भावे, हर पल तेरी याद सतावे,
याद में तेरी निज भूल गयो रे। मेरे साहिब मेरे – २

5 प्रेम से तुझको पूर्ण पाया, हृदय में है अपने बसाया,
कम ना हो प्रीत वचन दे रे। मेरे साहिब मेरे – २

6 सूरत तेरी प्यारी कितनी, बसती है नैनों में हमरी,
पाकर तुझको पूर्ण हुई रे। मेरे साहिब मेरे – २

मेरे साहिबा मेरे साहिबा मेरे विधाता के रंग विच रंग गई आं – २

–0–

भजन 48

मेरे तो साहिब सतगुरू, दूसरो ना कोई – २

1 जाके हाथ में कागज़ कलमी, मेरो साहिब वोहि होए – २ मेरे तो साहिब –

2 जाके नैनन प्रेम भरा, सुरति सूं मन मिटाये – २ मेरे तो साहिब –

3 सूरत उनकी तेज भरी, वस्त्र सफ़ेद ही धारी रे – २ मेरे तो साहिब –

4 रेशम जैसे केश हैं उनके, आत्म जोत बन आये रे – २ मेरे तो साहिब –

5 साधक पे वह मान लुटावें, पूर्ण संत वो मारे रे – २ मेरे तो साहिब –

6 देवी देव भी शीष झुकावें, सतपुरूष संत रूप में आये – २ मेरे तो साहिब –

7 ना हाथों में मुरली थामी, फिर भी बंसी बजाये – २ मेरे तो साहिब –

8 राम की महिमां वो हैं गाते, सतलोक वासी कहलाये – २ मेरे तो साहिब –

9 मेरे तो साहिब हैं सतगुरू, साधा जीवन बितायें – २ मेरे तो साहिब –

मेरे तो साहिब सतगुरू, दूसरो ना कोई – २

–0–

भजन 49

साहिब जी मैं मेघा तुम वर्षा, मैं कुसुम तुम सुगंध । साहिब जी –

1 मैं सूरज तुम तेज, मैं प्यास तुम पानी । साहिब जी –

2 मैं चकौर तुम चाँद, मैं कीचड़ तुम कमल । साहिब जी –

3 मैं मछली तुम साग़र, मैं नारी तुम योवन । साहिब जी –

4 मैं मीरा तुम गिरधर, मैं सुर तुम संगीत । साहिब जी –

5 मैं ध्यान तुम सुरति, मैं काग़ज तुम कलम । साहिब जी –

6 मैं रोटी तुम अग्नि, मैं लोहा तुम पारस । साहिब जी –

1 मैं सीप तुम मोती, मैं फल तुम पेड़ । साहिब जी –

8 मैं नाव तुम किनारा, मैं बालक तुम मां । साहिब जी –

9 मैं श्वांस तुम प्राण, मैं हंसा तुम सतपुरूष । साहिब जी –

10 मैं शरीर तुम आत्म, मैं साधक तुम संत । साहिब जी –

11 मैं कीट तुम बृह्ंगा, आत्म किया हंसा । साहिब जी –

साहिब जी मैं मेघा तुम वर्षा, मैं कुसुम तुम सुगंध । साहिब जी –

–0–

भजन 50

साहिब मोरे तुझ संग, अब तो ये प्रीत है जुड़ी – २

1 कुछ ना भावे कुछ ना आवे, तेरी सुरति सूं हूं जुड़ी – २ साहिब मोरे –

2 तेरे प्रेम सूं हूं लदी, बन के माला तेरे तन से जुड़ी – २ साहिब मोरे –

3 तुझ संग जाना सब पा जाना, आये कब वो घड़ी – २ साहिब मोरे –

4 कोई आहट दूर सूं आवे, हो जाऊँ द्वारे खड़ी – २ साहिब मोरे –

5 हर पल हो मेरी सुरति में बसते, कब हूंगी संग खड़ी – २ साहिब मोरे –

6 हर पल मेरी याद में रहते, हूं मैं प्रीत से तुझ संग जुड़ी – २ साहिब मोरे –

7 कब तुझे पाऊँ संसार तर जाऊँ, इस आस में हूं पड़ी – २ साहिब मोरे –

8 पल पल अब तो है बहाना, जब सुरति सूं तुझ संग जुड़ी – २ साहिब मोरे –

साहिब मोरे तुझ संग, अब तो ये प्रीत है जुड़ी – २

–0–

भजन 51

मैं नादान मैं अन्जान, साहिब जी दियो मोहे आत्म ज्ञान – २

1 साहिब आये जग कल्याण, पा ले पा ले उनसे सब्द का दान – २ मैं नादान –

2 स्वयं सतपुरूष आये हम अन्जान, हैं वो पिता हमारे उन्हें पहचान–२ मैं नादान –

3 सतलोक है सच्चा घर तूं ले जान, छोड़ दे झूठी माया झूठ अभिमान–२ मै नादान –

4 सतगुरू सूं मोक्ष निष्चित ले जान, क्या सोया पड़ा निज को पहचान–२ मैं नादान –

5 साग़र में बूंद मिले साग़र ही जान, अब जाग सपन से निज को पहचान –२ मैं नादान –

6 साहिब सतलोक स्वामी उन्हें प्रणाम, त्रिलोक स्वामी निरंकार भगवान – २ मैं नादान –

7 जीवन है संध्या काल समान, इसको मत तूं अपना सब कुछ मान – २ मैं नादान –

8 पीतल सोने सा चमके, पर सोने की कर पहचान – २ मैं नादान –

9 जो हर मोसम रहे ईक समान, सांचा सतगुरू जान – २ मैं नादान –

10 अपनी 'मै' तज के प्यारे, सतगुरू शरणी कर प्रणाम – २ मैं नादान –

11 वो आत्म रूप को करें हंसा, इस सत्त को तूं ले जान – २ मैं नादान –

मैं नादान मैं अन्जान, साहिब जी दियो मोहे आत्म ज्ञान – २

–0–

भजन 52

ये झूठा संसार साहिब जी, ये झूठा संसार,
ये झूठा संसार, बस सांचा साहिबन दरबार – २

1 ये रिश्ते नाते झूठे, ये माल ख़जाना झूठा – २ ये झूठा संसार –

2 तुम जाग जाओ ईक बार, साहिब ले चलेंगे पार – २ ये झूठा संसार –

3 सब देखें हैं स्वर्ग नर्क द्वारे, मुझे ना जमना है बारम्बार – २ ये झूठा संसार –

4 इक सतलोक ही है मोक्ष द्वार, सतगुरू ही ले चलें उस दरबार – २ ये झूठा संसार –

5 मनुष्य जन्म जो मिला है इस बार, इसे खोना ना व्यर्थ गंवार – २ ये झूठा संसार –

6 काल पल पल है तुझपे सवार, संत से ले ले नाम तूं सार – २ ये झूठा संसार –

7 जीवित मरे जमना ना पड़े दौबारा, मेरे साहिब सभी से करते प्यार–२ ये झूठा संसार –

8 व्यर्थ ना गंवाओ अनमोल है जीवन, सतगुरू ना मिले बारम्बार–२ ये झूठा संसार –

ये झूठा संसार साहिब जी, ये झूठा संसार,
ये झूठा संसार, बस सांचा साहिबन दरबार – २

–0–

भजन 53

साहिब तेरे प्रेम से बंधी ये डौरी, तूं चाँद मैं चकौरी – २

1 जो हम बोये सो हम पाये, तुझ बिन लेखा ना बदला जाये – २ साहिब तेरे –

2 सब छोड़ा तो सब पाया जान, मांगन तो है मरन समान – २ साहिब तेरे –

3 साहिब तो हैं प्रेम की बाती, जुड़के उन संग बन जा जोती – २ साहिब तेरे –

4 जो तूं मोड़े जग सूं मूंह, जागे सतगुरू से तेरा नेह – २ साहिब तेरे –

5 जब तूं मांगे बन जाये कैदी, काल चक्र में फंसा रहे सदा ही – २ साहिब तेरे –

6 सार सब्द ही काटे तेरा जाल, चुपके से करते हैं कमाल – २ साहिब तेरे –

7 क्यूं ख़र में है पड़ा, सत्त नाम को पा ले जीते जी – २ साहिब तेरे –

8 गुरू चरणों में शीष झुका ले तूं, पल में मोक्ष पा लो जी – २ साहिब तेरे –

9 काल भरमा रहा है मन रूप में, सतगुरू के रंग में रंग लो जी – २ साहिब तेरे –

10 कर पहचान अपनी तूं आत्म नांहि, है हंसा ईस भेद को ले जान – २ साहिब तेरे –

11 सांचा घर सतलोक है, जिस को हम्हें है पाना – २ साहिब तेरे –

12 हम तो यहां मुसाफ़िर हैं, ईक दिन घर है जाना – २ साहिब तेरे –

13 युगन युगन आये सतगुरू प्यारा, मांग रहित भगत पाये उसका द्वारा – २ साहिब तेरे –

14 पूजा पाठ भक्ति है माया, नानक मीरां कबीर रविदास जी बतलाया–२ साहिब तेरे –

15 सच्चा मालिक सतपुरूष प्यारा, पा ले सतगुरू सूं उनका पता न्यारा–२ साहिब तेरे –

16 सतपुरूष हैं साथ हमने ना जाना, मन ने ना छोड़ा हमको भरमाना – २ साहिब तेरे –

17 सतगुरू भक्ति बिन नहीं निस्तारा, जागो जीवन मिले ना दौबारा – २ साहिब तेरे –

18 सार सब्द में सतपुरूष जी वासा, सतगुरू भी फ़िरते बनके दासा – २ साहिब तेरे –

19 जो जन जीवन यश में बितायो, पूर्ण संत को कभी ना पायो – २ साहिब तेरे –

20 पंच तत्व से जगत बना है, पंच तत्व में जा समायो – २ साहिब तेरे –

21 भूल चुका है तूं निज को, व्यर्थ ही जीवन गंवायो – २ साहिब तेरे –

22 दुर्लभ मानव जन्म ये पायो, मोह माया तज सत्त को पायो – २ साहिब तेरे –

23 बड़ता जा रहा अंधेरा, काल ने डाला है डेरा – २ साहिब तेरे –

24 बिन सतगुरू जीवन में, कबहु ना होत सवेरा – २ साहिब तेरे –

25 दिन दिन घटत जात है, विष तूं पिये जात है – २ साहिब तेरे –

26 बिन सब्द पाये हर पल, तूं मरत जात है – २ साहिब तेरे –

साहिब तेरे प्रेम से बंधी ये डौरी, तूं चाँद मैं चकौरी – २

–0–

भजन 54

साहिब जी तुम जो मिले, सब मिल गया है,
तुझ बिन सच्ची प्रीत कहां है – २

1 परमहंस जग जो तूं आया, आनंद ही आनंद है मैने पाया – २ तुझ बिन –

2 तुझसा प्रेमी जग में कहां है, मोह माया से तूं तो जुदा है – २ तुझ बिन –

3 तेरी प्रीति ने मुझको संभाला, जो ईच्छा थी पूर्ण कर डाला – २ तुझ बिन –

4 मैं तो हूं इस जग से भागी, तुझ संग सच्ची प्रीत जो लागी – २ तुझ बिन –

5 तेरी प्रीत से मैं तर जाऊँ, पूर्ण सतगुरू फ़िर कहां मैं पाऊँ – २ तुझ बिन –

6 हर पल अब तो वर्ष समान है, बीते जल्दी अब धीरज कहां है – २ तुझ बिन –

7 आशा तृष्णा घटती जाये, आत्म तो बस तुझको ही चाहे – २ तुझ बिन –

8 सतगुरू संग जा प्रीत जुड़ी, सब में है अब उनकी छवी – २ तुझ बिन –

9 आठों पहर मुझ संग रहते, प्रेम आत्म है मुझसे वो कहते – २ तुझ बिन –

10 साग़र में जैसे रहता पानी, सदा रहे मुझमें प्रेम की वाणी – २ तुझ बिन –

साहिब जी तुम जो मिले, सब मिल गया है,
तुझ बिन सच्ची प्रीत कहां है – २

–0–

भजन 55

हम तो हंसा सतलोक के, निरंकार ने लिया था मांग,
दे दिया था फ़िर हमको, तन मन का दान – २।

1 तन मन का देकर हमको दान, निरंकार ने बना लिया गुलाम,
पूर्ण सतगुरू जगत पधारे, सुरति सूं ले चलें निजघर निजधाम – २ हम तो –

2 मन से पनपे मोह माया, माया से अहम अंहकार,
भूल गये हम हंसा, अपना सच्चा घर बाहर – २ हम तो –

3 खर अक्षर में पड़कर, सत्त का छूटा साथ,
क्या करेगा हंसा बेचारा, पहन लिया माया वस्त्र सारा – २ हम तो –

4 संत तो आये हम्हें जगाने, लिप्त माया में हम ना माने,
मनुष्य जीवन ही है ईक मौका, छोड़ दे दुनियां है इक धोखा – २ हम तो –

5 ये तो रचा था ईक खेला, जीत के करना था सतपुरूष से मेला,
जिसने पायो सतगुरू प्यारा, उसने ना पाना जन्म दौबारा – २ हम तो –

6 सतगुरू तो है प्रेम भण्डार, डूब के करना पड़ेगा पार,
मेरे सतगुरू मुझको भजें, मैं पाऊँ विश्राम – २ हम तो –

7 बीते मेरी सुबह शाम, ले के सतगुरू नाम,
साहिब सतनाम साहिब जी साहिब सतनाम – २ हम तो –

हम तो हंसा सतलोक के, निरंकार ने लिया था मांग,
दे दिया था फ़िर हमको, तन मन का दान – २।

–0–

भजन 56

मेरे साहिब पधारे हैं, सतगुरू पधारे हैं,
वो मेरी डूबती नैया, भव पार लगाये हैं – २

1 मैं उनकी हूं दासी, बस दरस की हूं प्यासी,
वो हर पल संग मेरे, मन माया को दूर करें – २ मेरे साहिब –

2 जो माया जाल हटे, पाऊँगी पास उन्हें,
जन्मों की मेरी उदासी, सतगुरू पल में दूर करी – २ मेरे साहिब –

3 माया भक्ति से दूर करे, साहिब तो हैं पास खड़े,
वो तो प्रेम ही प्रेम हैं, तो क्यूं ना तूं उनसे जुड़े – २ मेरे साहिब –

4 वो तो हैं प्रेम के दाता, क्युं तूं उन से डरे,
वो ले के जहाज खड़े, चलो हम भी पार चलें – २ मेरे साहिब –

5 ये तो है मार्ग सरल, फ़िर क्यूं है समय का डर,
वो काटे कूकर्म मेरे, फ़िर तुझको क्या है फ़िकर – २ मेरे साहिब –

6 हैं वे सतगुरू प्यारे, सारे जग से हैं वो न्यारे,
सच्ची प्रीत सिखाते हैं, आत्म को हंसा करें – २ मेरे साहिब –

7 मेरे साहिब जो दात हैं देते, सतलोक ही दे देते हैं,
हम तो हैं उस देस के वासी, जहां हंसा ही रहते हैं – २ मेरे साहिब –

मेरे साहिब पधारे हैं, सतगुरू पधारे हैं,
वो मेरी डूबती नैया, भव पार लगाये हैं – २

–0–

भजन 57

तुझे क्या सुनाऊँ मेरे साहिबा, मेरे प्राण में तूं समा गया – २

1 दर पे जो तेरे आ गया, मुक्ति की राह वो पा गया,
अब शेष कुछ ना रह गया, जीवन लक्ष्य वो पा गया – २ तुझे क्या –
2 दिनचर्या कार्य जो भी हो, गुरू चरणों में समर्पित हो,
हम तो यहां राहगीर हैं, समय बिता घर को जाना है – २ तुझे क्या –
3 ईक साहिब ही सांचा संत है, जिस ने भव पार लगाना है,
सार नाम का रस पी कर, डुबकी मार पार जाना है – २ तुझे क्या –
4 जो तुझको मैने पाया है, सच्ची राह को मैने जाना है,
तेरे प्रेम की वर्षा में भीग कर, मन माया से छूटा साथ है – २ तुझे क्या –
5 संसार तो ईक माया है, सबको इसने खाया है,
कोई यहां ना बच पाया है, अंधेरा चारो ओर छाया है – २ तुझे क्या –
6 सतगुरू ने जो दिलाया है, उसने अंधेरे को जलाया है,
चारों तरफ़ उजियारा है, फ़िर माया ने क्यूं भरमाया हैं – २ तुझे क्या –
7 अंत समय जब आता है, तब पंछी क्यूं फड़फड़ाता है,
समुन्दर में तूफ़ान आता है, सार नाम ही पार लगाता है – २ तुझे क्या –
8 हम हर पल अपने आप को, उधार रख के मांगते हैं,
जिस कारण बारम्बार हम को, जन्म लेना पड़ता है – २ तुझे क्या –
9 जब मन माया मिट जाये, सार सब्द सूं सतगुरू प्रीति होती है,
प्रीत में आत्म जलती है, तो विरह वैराग उत्पन्न होता है – २ तुझे क्या –
10 विरह की अग्नि में जल कर, प्रेम प्रकट हो जाता है,
प्रेम के उपरांत, आनंद ही आनंद होता है – २ तुझे क्या –
11 आत्म निर्भयी निर्भव होती है, सुन आकाश प्रेम इसके अंग हैं,
सतगुरू से लागे जो प्रीति, जग से फ़िरू मैं अंखिया मीची –२ तुझे क्या –
12 जो वो दे वो मैं वो पकाऊँ, खाली बर्तन कहां से भर लाऊँ,
साहिब मेरे प्रेम की जोती, मैं सीप वो उसमे मोती – २ तुझे क्या –
13 जग को चलाये बैठे हैं, महिमां उनकी वर्णन करी ना जाये,
सार नाम सूं मान मिटाये, सब में प्रेम की जोत जगाऐं – २ तुझे क्या –
14 सतगुरू सूं प्रेम की जोत जगाकर, मन माया से मुक्ति पाऐं,
विरह वैराग़ उत्पन्न कर, परमांनद को पाऐं – २ तुझे क्या –

15 भरोसा तो है सच्चा दान, तूं चाहे अब मान ना मान,
जब तक ना होगा ये दान, कैसे प्रीत को पायेगा तूं जान – २ तुझे क्या –
16 जब सतगुरू सूं प्रीती मिली, तो सब कुछ पाया जान,
जन्मों की प्यास मिटे, ले तूं आत्म पहचान – २ तुझे क्या –
17 शरीर की सुन्दरता प्रेम नहीं, ईक दिन मिट जायेगा,
प्रेम तो है आत्म जोत, जगा लो अमर बन जायेगा – २ तुझे क्या –
18 शारीरिक प्रेम सच्चा होता तो, मृत्यु उपरांत भुलाया जाता ना,
शरीर मिटा तो रिश्ते मिटे, फ़िर ये संसार अपना कहां रे–२ तुझे क्या –
19 कचरा ही कचरा जीवन प्यारे, बिन सतगुरू सफ़ाई ना हो पाती है,
पूर्ण सतगुरू शरण में जाके, मोक्ष की राह मिल जाती है – २ तुझे क्या –

तुझे क्या सुनाऊँ मेरे साहिबा, मेरे प्राण में तूं समा गया – २

–0–

भजन 58

सोई पड़ी थी मुझको जगाया, आत्म की प्यास को तूने बुझाया,
सार रस पिलाया तूने, साहिबा सार रस पिलाया तूने – २

1 कितने जीवन मैं व्यर्थ गंवाया, अब जा के है तुझको पाया – सार रस –

2 मैं तेरी दासी जन्मों की प्यासी, कर्म जाल से है तूने बचाया – सार रस –

3 गृहस्थी में रहना मुझको सिखाया, मन माया से पीछा छुड़ाया – सार रस –

4 कीचड़ में है कमल खिलाया, चारों दिशा महकना सिखाया – सार रस –

5 खुद को भुला के तुझे है पाया, त्रिलाकी से आगे सत्तलोक भेद बताया – सार रस –

6 गुरू शिष्य रिश्ता अनमोल बनाया, संत उद्देष्य गुरू महत्व बताया – सार रस –

7 आत्म को तूने हंसा बनाया, तुझको पा कर सब कुछ है पाया – सार रस –

8 प्रेम माला से मीरा बनाया, जीवन रहस्य तूने बताया – सार रस –

9 मैं तेरी दासी दरस की प्यासी, ले चल वहां जहां के वासी – सार रस –

10 मोह के वस्त्र तभी है उदासी, दिखे जब समान सब फ़िर प्यास कहां की – सार रस –

11 कितने पर्वत पहाड़ करने पड़ेंगें पार, तो होंगे साहिबन दीदार – सार रस –

12 जब उतरेगा वस्त्र मान का, तो होगा दीदार निजरूप का – सार रस –

13 तुझको पा कर सब कुछ है पाया, जन्म जन्म का लक्ष्य पूरा हो आया – सार रस –

सोई पड़ी थी मुझको जगाया, आत्म की प्यास को तूने बुझाया,
सार रस पिलाया तूने, साहिबा सार रस पिलाया तूने – २

–0–

भजन 59

तेरा तुझको सौंप के, क्या लागे अब मेरा,
मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है वो तेरा – साहिब जी –

1 प्रेम की डौरी से बंधी, तूं लाया है सवेरा,
साहिब तूं लाया है सवेरा, तुझ बिन जीवन कैसा,
मुझ में तूं समाया है, साहिबा मुझ में तूं समाया है – साहिब जी –

2 चुपके से बता दे तूं, कैसे पाऊँ मैं तुझको,
सार रस में रम जाऊँ, जो मैं पाऊँ तुझको,
तेरा तुझको सौंप के, क्या लागे अब मेरा – साहिब जी –

3 पाप पुण्य की ख़बर नहीं, ध्यान सिमरन का पता नहीं,
मैं तो बस तेरी हूं दासी, मैं तो हूं तेरे दरस की प्यासी,
मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो दिखे वो तेरा – साहिब जी –

4 तुझमें ही मैं रम जाऊँ, है यह अब आस ये मेरी,
विनती मेरी सुन ले तूं, हो गई हूं अब मैं तेरी,
तेरा तुझको सौंप के, कुछ ना लागे मेरा – साहिब जी –

5 अब तो कोई वैर नहीं, अब तो कोई ग़ैर नहीं,
तुम में खोकर खो गई हूं, तुझ संग तार जो जोड़ी,
मुझमें मेरा कुछ नहीं, जो है दिया है तेरा – साहिब जी –

तेरा तुझको सौंप के, क्या लागे अब मेरा,
मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है वो तेरा – साहिब जी –

–0–

भजन 60

मेरे साहिबा ओ मेरे साहिबा, तूं तो मेरा मित्र तूं ही मेरा पित्र,
तूं तो मेरा प्रेम, तूं ही मेरा स्वामी है – ओ मेरे साहिबा –

1 तुझ संग प्रीत को जाना, तुझ संग निज को पहचाना – ओ मेरे साहिबा –

2 तुझ संग जो मैं जुड़ गई, तर गई मेरी नैया हो गई पार – ओ मेरे साहिबा –

3 तुझ बिन अब कोई ना सहारा, मुझ में बहने लगी प्रीत की धारा – ओ मेरे साहिबा –

4 तूं चंदा मैं झिलमिल तारा, सब कुछ लगने लगा है प्यारा – ओ मेरे साहिबा –

5 तुझको पाऊँ तुझ में रम जाऊँ, खुली आंख तेरे दर्शन पाऊँ – ओ मेरे साहिबा –

6 सार रस में मैं खो जाऊँ, किस के लिए अब होश में आऊँ – ओ मेरे साहिबा –

7 जब सच्चा साहिबन मिल गया, आकृतियों के पिछे क्युं मैं जाऊँ – ओ मेरे साहिबा –

8 छम छम बारिश में झिलमिल सा आये, अपनी नाव में उस पार ले जाए – ओ मेरे साहिबा –

9 जहां बिन बादल वर्षा होती, बिन सूरज उजियारा है – ओ मेरे साहिबा –

10 वोही तो प्यारा देश हमारा, जहां से सतगुरू प्यारा पधारा – ओ मेरे साहिबा –

मेरे साहिबा ओ मेरे साहिबा, तूं तो मेरा मित्र तूं ही मेरा पित्र,
तूं तो मेरा प्रेम, तूं ही मेरा स्वामी है – ओ मेरे साहिबा –

–0–

भजन 61

मेरे गुरू प्यारे, मेरे गुरू बड़े प्यारे – २

1 मुझ पे कृपा बरसाने वाले, मेरी चिंता हरने वाले – २ मेरे गुरू –

2 तूं बैठा है उस पारे, ले चल मुझे उस किनारे – २ मेरे गुरू –

3 अखियों में मेरी समा रे, मेरे दुखों को हरने वाले – २ मेरे गुरू –

4 सब से प्रीती करने वाले, अमृत वर्षा बरसाने वाले – २ मेरे गुरू –

5 मेरे दुखों को हरने वाले, कर्म जाल से बचाने वाले – २ मेरे गुरू –

6 मोक्ष पथ ले जाने वाले, संगत सेवा करने वाले – २ मेरे गुरू –

7 नाम जहाज ले आने वाले, कीचड़ में कमल खिलाने वाले – २ मेरे गुरू –

8 आत्म को हंसा बनाने वाले, ७१ पीढ़ियां पार लगाने वाले – २ मेरे गुरू –

9 प्रेम जोती जगाने वाले, आवा–गमण छुड़ाने वाले – २ मेरे गुरू –

10 दुनियां को चलाने वाले, शरणागत को पार लगाने वाले – २ मेरे गुरू –

11 अंदर की राह दिखाने वाले, प्रेम की जोत जलाने वाले – २ मेरे गुरू –

मेरे गुरू प्यारे, मेरे गुरू बड़े प्यारे – २

–0–

भजन 62

साहिब मेरे मैं पाऊँ दर्शन तेरे – २
तेरे दरस से मैं तर जाऊँ – २

1 साहिब मेरे पाऊँ मैं दर्शन तेरे,
सांझ सवेरे पाऊँ मैं दरशन तेरे – २ साहिब मेरे –
2 जो तूं मिलया जीवन खिलया,
जीने का उद्देश्य है मिलया – २ साहिब मेरे –
3 छम छम नाचूं छम छम गांऊँ,
जो मैं तेरी प्रीती पाऊँ – २ साहिब मेरे –
4 जन्म मेरा सफल हो गया,
तुझ से जो सार सब्द है पाया – २ साहिब मेरे –
5 तेरी प्रीती ने मुझको जगाया,
जब पुकारा दौड़ा चला आया – २ साहिब मेरे –
6 तुझसे ही सब कुछ पाई,
अब सब की आस गंवाई – २ साहिब मेरे –
7 मैं तेरी तूं साहिबन मेरा,
तुझ संग प्रीत लगाई – २ साहिब मेरे –

साहिब मेरे मैं पाऊँ दर्शन तेरे – २
तेरे दरस से मैं तर जाऊँ – २

–0–

भजन 63

साहिब जी बड़ती प्रीत को कैसे सम्भालूं।
इस कटारी को कैसे हृदय में उतारूं।।

1 उपझ रहा जो किसे सुनाऊँ,
चीर हृदय को विराग़ कैसे दिखाऊँ। – साहिब जी
2 फैलाव प्रेम का कैसे छुपाऊँ,
त्रिलोक में किसी को ग़ैर नां पाऊँ। – साहिब जी

3 हृदय का ताल सुना नां पाऊँ,
बड़ते ताल से मैं घबराऊँ। – साहिब जी

4 सीमा प्रेम की देख नां पाऊँ,
तड़प है कैसी सह नां पाऊँ। – साहिब जी

5 कितना प्रेम है कैसे जताऊँ,
अपने फटे को किस से सिलवाऊँ। – साहिब जी

6 बहती ऊर्जा से कलम उठाऊँ,
साहिब जी को पाती लिख पाऊँ। – साहिब जी

7 वैराग़ क्या है कैसे बताऊँ,
साहिब जी हाल मैं किसे सुनाऊँ। – साहिब जी

8 तेरी ऊर्जा से लिख पाऊँ,
इस तड़प को तभी सह पाऊँ।– साहिब जी

साहिब जी बड़ती प्रीत को कैसे सम्भालूं।
इस कटारी को कैसे हृदय में उतारूं।।

–0–

भजन 64

साहिब जी तेरे पथ पे चलने लगी ।
मेरे साहिब जी तेरे पथ पे चलने लगी।।

1 तेरी ममता से हूं मैं भरी,
फ़िर भी ममता लुटाने को हूं पड़ी – साहिब जी

2 डग–मगाया जिया तूने कुछ ना कहा,
मेरी हां को सदा तथास्तु कहा – साहिब जी

3 पिता को वचन था दिया तूने पूरा किया,
मोक्ष उसको दिया वचन पूरा किया – साहिब जी

4 मान इतना दिया आँचल कम पड़ गया,
तूने क्या कर दिया कहने को कुछ ना रहा – साहिब जी

5 तेरे पथ पे चली किसी से मैं ना डरी,
तूने रक्षा की सब की रक्षा है की – साहिब जी

6 जो भी राह मिली तेरी आज्ञा से चली,
निज को जानने लगी आत्म पहचानने लगी – साहिब जी

7 वैराग़ समझ जो आया आँसु रूक ना पाया,
सब सौंप आई निज को भूल आई – साहिब जी

8 संगत सेवा का मौका दिया रहम हम पे किया,
खुशनसीबी हमारी हम जो तुझसे मिले – साहिब जी

9 चार लोक का मालिक दर्शन घर पे दिया,
तेरा शुक्रिया मेरे साहिबा तेरा शुक्रिया – साहिब जी

10 अंतिम यात्रा में आरती किया,
प्रेम लाज में सब कुछ किया – साहिब जी

11 तुम्हें समझने में देर हुई पर आत्म को जान सकी,
धीरज इतना दिया जुदाई पे उफ़ ना किया – साहिब जी

12 निज कांधा दिया यात्रा को पूरा किया,
सतलोक लिया हंसा सतलोक लिया – साहिब जी

साहिब जी तेरे पथ पे चलने लगी ।
मेरे साहिब जी तेरे पथ पे चलने लगी।।

–0–

भजन 65

खा़क में मिल जाओगे,
पर साहिब को ना पाओगे।

1 कितना ये अनमोल है जीवन,
बिन जाने ही चले जाओगे। खा़क में मिल –
2 वे नाम जी आये आवाज़ देने,
काल से ना बच पाओगे। खा़क में मिल –
3 जो भी कमाई की रे बंधया,
कुछ साथ ना ले जा पाओगे। खा़क में मिल –
4 मिल ले मेरे साहिब सूं प्यारे,
बारम्बार जन्म ना पाओगे। खा़क में मिल –
5 जे ना मिला सतगुरू प्यारा,
चक्र में फंसे रह जाओगे। खा़क में मिल –
6 जाने ले साहिब तूं बंध्या,
सतलोक ही तुम जाओगे। खा़क में मिल –
7 सतपुरूष गुरू रूप में आया कैसे तुम जानोगे,
सुन ले आवाज़ दास की तुझको पार ले जाऐंगे। खा़क में मिल –
8 पा ले पा ले साहिब तूं पा ले साहिबा,
चोदहां चौकड़ी कैसे पार लग पाओगे। खा़क में मिल –
9 खा़क में मिल जायेगा बंधेया,
जे पूर्ण सतगुरू नां पाओगे। खा़क में मिल –
10 जीवन तेरा अनमोल है बंधेया,
बिन सतगुरू कैसे मोक्ष पाओगे। खा़क में मिल –
11 जे तूं मिलना सतगुरू सूं,
ते मंज़िल तेरी नां है दूर। खा़क में मिल –

खा़क में मिल जाओगे,
पर साहिब को ना पाओगे।

–0–

भजन 66

साहिब जी ईन्सान तो अब ईन्सान खा रहा है – २

1 एक के दिमाग़ से, दूसरे में जा रहा है, – साहिब जी

2 गोला बन के, ईक दूसरे को डुबा रहा है, – साहिब जी

3 सदियों से फंसे इस भवर में, पैसा बटौरे जा रहा है, – साहिब जी

4 काल्पनिक दुनियां में, कब से जिये जा रहा है, – साहिब जी

5 मदहोशी में रहकर ईन्सान तो अब ईन्सान को खा रहा है– साहिब जी

6 किस कारण जन्मा था, भूले जा रहा है, – साहिब जी

7 प्राकृति भी बेहाल, कुछ ना कह पा रही है, – साहिब जी

8 मानसरोवर का पता नहीं, मोह में जिये जा रहा है, – साहिब जी

9 मिट्टी में मिल जाना है, अकड़ किये जा रहा है, – साहिब जी

10 स्वयं से प्रेम इतना, सब राख किये जा रहा है, – साहिब जी

11 ना कर अकड़ बंदेया, स्त्री कारण तूं जिये जा रहा है, – साहिब जी

ईन्सान तो अब ईन्सान को खा रहा है – २

–0–

घ भजन 67

सांचा नाम सांचा नाम – सतगुरू सतनाम – २
संत जी संत जी – सतगुरू सतनाम – २

1 सोये हुए जग को जगाने का काम
निजधाम हम को पहुंचाने का काम
करें हमारे संत जी उन्हें सतगुरू सतनाम – २ सांचा नाम –

2 भटके हुओं को समझाने ज्ञान
सतपुरूष जी की सत्ता महान
हम्हें समझाऐं संत जी महान – २ सांचा नाम –

3 सतगुरू सानिध्य से कटे मोह माया अज्ञान
पाप कर्मों से छुड़ाये संत जी का ज्ञान
करें हम सब का संत जी कल्याण – २ सांचा नाम –

4 सार सब्द का दे के ज्ञान
दूर भगाऐं मोह माया ज्ञान
ऐसे संत जी को हमारा प्रणाम – २ सांचा नाम –

5 कोई ना अपना अकेले हैं हम
कहां से आये कहां जायेंगे हम
संत जी की शरण में मिले ये ज्ञान – २ सांचा नाम –

6 सार सब्द का सुमिरन कर ले
संत जी के वचनों पे अमल तूं करले
छोड़ के अहंकार संत जी का हो ले
हंस तूं बन जा मिले निजधाम – २ सांचा नाम –

सांचा नाम सांचा नाम – सतगुरू सतनाम – २
संत जी संत जी – सतगुरू सतनाम – २

–0–

भजन 68

साहिब सत पुरूष मेरे – मैं तेरा तूं मेरा – २
जन्म जन्म से बिछड़ा हुआ – मैं अँश हूं तेरा – २

1 जीना मरना बिन तेरे – सब कुछ मेरा अधूरा – २
मैं तेरा तूं मेरा – मैं तेरा तूं मेरा – २

2 रहमत तेरी बिन सारा जग – प्राण बिना शरीरा – २
जैसे प्राण बिना शरीरा – मैं तेरा तूं मेरा – २

3 सूरज चँदा पृथ्वी आकाश – हर ईक में है तेरा ही जलवा – २
तुझ बिन सब अधूरा – मैं तेरा तूं मेरा – २

4 मैं कुछ भी नहीं – सब कुछ तूं है – २
सतगुरू में तूं है समाया – मैं तेरा तूं मेरा – २

5 सतगुरू जी का मिले सहारा – मैं हो जाऊँ तेरा – २
तूं मेरा मैं तेरा – मैं तेरा तूं मेरा – २

साहिब सत पुरूष मेरे – मैं तेरा तूं मेरा – २
जन्म जन्म से बिछड़ा हुआ – मैं अँश हूं तेरा – २

–0–

भजन 69

मेरा साहिब ही संग निभाए – मेरा साहिब ही संग निभाता – २
दिन भर जो भी कर्म करूं मैं – वो कर्ता बन जाता – २

1 मेरे सतगुरू – ज्ञान महांरथी – २
जो कोई उनकी – शरणी आता, ज्ञान अमृत में नहाता – मेरा साहिब –

2 मेरे सतगुरू – साहिबन प्यारे – २
जो भी उनसे प्रीत करे, उसका वह हो जाता, – मेरा साहिब –

3 मेरे सतगुरू – निर्मल निष्चल – २
साधकों का मान बड़ाये, साधकों का हो जाता – मेरा साहिब –

4 मेरे सतगुरू – साहिब सरूपा – २
आज्ञा चक्र में जो ध्यान करे, संत जी के दर्शन पाता – मेरा साहिब –

5 मेरे सतगुरू – वे नाम दास जी – २
जो कोई उनके प्रवचन सुने, अगला जन्म मानव तन पाता – मेरा साहिब –

6 मेरे सतगुरू – निजधाम वासी – २
जो कोई ध्यान प्रीत बड़ाता, संत साधक ईक हो साहिब में समाता – मेरा साहिब –

7 मेरे सतगुरू – परमहंस प्यारे – २
साधकों को हंस रूप बना के, मुक्ति मोक्ष दिलाता – मेरा साहिब –

मेरा साहिब ही संग निभाए – मेरा साहिब ही संग निभाता – २
दिन भर जो भी कर्म करूं मैं – वो कर्ता बन जाता – २

–0–

भजन 70

साहिब सतनाम – उच्चारे चला जा – २
सकल कष्ट अपने – निवारे चला जा – २

1 करेंगे साहिब – तेरी मदद हमेशा – २
तूं सीधे संत – द्वारे चला जा – २ साहिब सतनाम –

2 मनुष्य जन्म मिलता है – खुशकिस्मती से – २
साहिब भक्ति से – संवारे चला जा – २ साहिब सतनाम –

3 साहिब प्यार करते हैं – हम सभी से – २
हम उनके बालक – वो माता हमारी – २ साहिब सतनाम –

4 जग मतलबी – मतलब की दुनियांदारी – २
कोई ना अपना – मतलब की रिश्तेदारी – २ साहिब सतनाम –

5 जन्म मरन से – जो छुटकारा चाहिये – २
साहिब शरण आ – जो तेरे हितकारी – २ साहिब सतनाम –

6 जो उनकी शरण में – शीष झुकाता – २
साहिब कृपा सूं – सतगुरू को पाता – २ साहिब सतनाम –

7 सार सब्द जो – सतगुरू से पावे – २
सिमर सिमर – अपना कचरा जलावे – २ साहिब सतनाम –

8 निर्मल हो जो – संत कृपा को पावे – २
मोक्ष मिले – सतलोक वो जावे – २ साहिब सतनाम –

साहिब सतनाम – उच्चारे चला जा – २
सकल कष्ट अपने – निवारे चला जा – २

–0–

भजन 71

जमना मरना काल का खेला – हम सब हैं खिलाड़ी – २
आज कोई है मरा रे भैया – कल हमारी बारी – २

1 जन्म हुआ है नव जीवन का – खुशियां मंगल मनाओ – २
नव जीवन है साहिब से जुड़ा – इसको शीष निवाओ – २ जमना मरना –

2 दुनियां है इक झूठा सपना – मोह माया कपट व तृष्णा – २
हम सब जिसके पुजारी – दुनियां लगे है प्यारी – २ जमना मरना –

3 चार वर्ष के आते आते – भूला साहिब को सारा – २
माया ममता की धारा में – जीना लगा रे प्यारा – २ जमना मरना –

4 आई जवानी करे नादानी – मोज मस्ती शरारतें सारी की सारी – २
संगी साथी प्यारे लगे रे – नष्ट करे जवानी – २ जमना मरना –

5 लो रे भैया कमाने लगा रे – दुनियां की फीकरें सारी – २
जेब भरी है लगने लगा रे – दुनियां है अपनी सारी – २ जमना मरना –

6 लो रे भैया हो गई शादी – बड़ गई ज़िम्मेदारी – २
बीवी बच्चों संग मस्त हुआ – बन बैठा अहंकारी – २ जमना मरना –

7 कम पैसे वाले कीड़े मकौड़े – लगे उसे दुनियां सारी – २
कर के दग़ाबाजी बन बैठा – ईमानदार लीडर व्योपारी – २ जमना मरना –

8 शान–ओ–शोकत यश पाने को – बन बैठा पुजारी – २
दान करता लंगर लगाता – जै जै करे दुनियां सारी – २ जमना मरना –

9 गई जवानी आया बुढ़ापा – अस्वस्थ हुआ अहंकारी – २
ईलाज कराया काम ना आया – आऊट हो गई वारी, मर गया अहंकारी – २ जमना मरना –

10 सुनो रे साधको समझ जाओ रे – अगली हमारी वारी – २
सतगुरू प्यारे हम्हें पुकारें – व्यर्थ नां समय गंवाओ, सत्संग में आ जाओ – २ जमना मरना–

11 तज के अहम सारे वहम – साहिब के गुण गाओ – २
मुश्किल से मानव जन्म मिला है – भक्ति में इसे लगाओ, मोक्ष को पा जाओ–२ जमना मरना –

जमना मरना काल का खेला – हम सब हैं खिलाड़ी – २
आज कोई है मरा रे भैया – कल हमारी बारी – २

–0–

भजन 72

क्या महिमां क्या महिमां – मेरे संत जी दी क्या महिमां– २
मेरे संत जी भजन जो गावें – साधक सारे रज रज नहावें – २
शब्द नहीं अमृत बरसावें – क्या महिमां – २

1 साहिब का गुणगान वो करते – २
देवों का सम्मान वो करते – २
क्रौध मन को बुरा न कहते – क्या महिमां – २

2 सब गुरू मन को बुरा हैं कहते – २
मन काल को दुश्मन बताते – २
संत जी इनको मीत बनावे – क्या महिमां – २

3 साधकों का मान वो करते – २
सत्संग में उनका कचरा हरते – २
संग में बैठ ध्यान करवावें – क्या महिमां – २

4 देव मन व निरंकार जो सारे – २
जगत रच के व्यवस्था चला रे – २
जो जन इनका मान करे वो संत प्यारे – क्या महिमां – २

5 जो जन झूठ व पाप कमाते – २
नरक योनि में वासा पाते – २
जो जन मदिरा मास हैं खाते
प्रेत योनि में वासा पाते – क्या महिमां – २

6 जो जन नाग़ों को हैं पूजें – २
हज़ारों साल पाताल वो रहते – २
जो जन देवों को हैं पूजे
स्वर्ग भोग मृत्यु लोक में आते – क्या महिमां – २

7 सारे ब्रह्मण्ड का मान वो करते – २
हर देव प्राणी का मान वो करते – २
सतपुरूष की महिमां गाते
साहिब भक्ति को लक्ष्य बताते – क्या महिमां – २

8 सार सब्द सतपुरूष का वासा – २
सुरत सब्द में संत जी वासा – २
साहिब संत इस में समावें
संत कृपा से साधक पावें – क्या महिमां – २

9 सतगुरू संग प्रीत बड़ाओ – २
उनके प्रवचनों को अमल में लाओ – २
ध्यान भक्ति में चित्त लगाओ
जन्म मरन से मुक्ति पाओ – क्या महिमां – २

क्या महिमां क्या महिमां – मेरे संत जी दी क्या महिमां– २
मेरे संत जी भजन जो गावें – साधक सारे रज रज नहावें – २
शब्द नहीं अमृत बरसावें – क्या महिमां – २

–0–

भजन 73

साहिब के हम बच्चे सारे – प्राणों में साहिब समाया
स्वांस स्वांस में सिमरन कर लो – छोड़ के जग की माया

1 इस जग में क्या जीना
जो झूठ कपट और माया – २ साहिब के हम –

2 नींद से सब जाग उठो
संत जी ने अलख जगाया – २ साहिब के हम –

3 सतगुरू बांटें नाम के मोती
लूट लो छोड़ के माया – २ साहिब के हम –

4 गुज़रा समय हाथ नां आवे
कल होगा पछतावा – २ साहिब के हम –

5 सार सब्द का सुमिरन कर ले
साहिब जिस में समाया – २ साहिब के हम –

6 सुरत नाम जहाज तूं चढ़ ले
छोड़ के मोहिनी माया – २ साहिब के हम –

7 सतगुरू अमृत वर्षा करते
आत्म संग नहाओ – २ साहिब के हम –

8 अमरपुर के वासी हैं हम
निजधाम है घर हमारा – २ साहिब के हम –

साहिब के हम बच्चे सारे – प्राणों में साहिब समाया
स्वांस स्वांस में सिमरन कर लो – छोड़ के जग की माया

–0–

भजन 74

मैने पूर्ण सतगुरू पाए हैं, मेरे साहिब जिन में समाए हैं ।
ये अंतिम जन्म अब मेरा है, आगे साहिब संग बसेरा है ।।

1 मेरा तन मन गुरू को समर्पित है ।
मेरा गुरू ही प्रीतम प्यारा है ।।
गुरू संग प्रीत बड़ाऊंगी ।
अब उनकी मैं हो जाऊंगी ।। मैनें पूर्ण ——

2 ना तृष्णा है जग माया की ।
ना लालसा है इस काया की ।।
मैनें लाखों जन्म गंवाए हैं ।
पर किसी लेखे नहीं आए हैं ।। मैनें पूर्ण ——

3 ना मौक्ष की अभिलाषा है ।
ना वसुन्धरा की आषा है ।।
सच्चे प्रीतम को मैं पाऊंगी ।
गुरू संग उन में समाऊंगी ।। मैनें पूर्ण ——

4 उस प्रीतम से सुरति लगाई है ।
जन्मों की तृष्णा मिटाई है ।।
हर सूं परमानंद छाया है ।
गुरू कृपा सूं सबकुछ पाया है ।। मैनें पूर्ण ——

5 बिन सतगुरू कहां अस्तित्व मेरा है ।
मुझे महां काल ने घेरा है ।।
गुरू कृपा से सार नाम पाया है ।
जिसे सिमर—सिमर जन्मों का कचरा जलाया है।। मैनें पूर्ण —

6 जन्मों जन्मों का मैं महा पापी था ।
वासना फींकरों का अभिलाषी था ।।
सतगुरू कृपा ने ऊभारा है ।
अब गुरू बिन कहां गुज़ारा है ।। मैनें पूर्ण ——

मैने पूर्ण सतगुरू पाए हैं, मेरे साहिब जिन में समाए हैं ।
ये अंतिम जन्म अब मेरा है, आगे साहिब संग बसेरा है ।।

—0—

भजन 75

छोड़ दे बंदे 'मैं' मेरी तूं – 2, साहिब सत्संग आया कर ।
मौत तेरे सर पे खड़ी है, व्यर्थ ना समय गंवाया कर – 2 ।।

1 बाल अवस्था खेल गंवायो, जवानी गयी मोज मस्ती में ।
वासना तृष्णा कम ना हुई ये, करोड़ों जन्म गंवायो तूं ।। छोड़ दे बंदे

2 फींकरों कचरों में मस्त रहा तूं, बार बार जम के मरता रहा तूं ।
हर खुशी जग की में ग़म छुपा है, करोड़ों कष्ट उठायो तूं ।। छोड़ दे बंदे

3 अनमोल मानव जन्म मिला है, कौड़ी भाव ना गंवाया कर ।
साहिब का है अंश तूं प्यारे, इस बात पे ग़ौर फरमाया कर ।। छोड़ दे बंदे

4 जन्म मरन से जो बचना चाहे, सतगुरू शरण में आया कर ।
समर्पण हो जा गुरू चरणों में, साहिब को रिझाया कर ।। छोड़ दे बंदे

5 सतगुरू जो हुए दीन दयाल तो, सार सब्द तूं पाएगा ।
सिमर सिमर सार नाम तूं, तेरा कर्म जाल कट जाएगा ।। छोड़ दे बंदे

6 गुरू प्रवचनों पे अमल तूं कर ले, ध्यान भक्ति में चित रमा ले ।
साहिब मिलेंगे गुरू रूप में, अष्ट्म चक्र में ध्यान लगाया कर ।। छोड़ दे बंदे

7 मेरे सतगुरू वे नाम जी, शरणागत को साधक बनाएं ।
साधक को हंस रूप बना के, अपने संग उड़ा ले जाए ।
सत्यपुरूष से दें मिलवांए, सत्यपुरूष से दें मिलवांए ।। छोड़ दे बंदे

8 करोड़ों जन्मों के बिछड़े मिलावें, जन्म जन्म की तृष्णा मिटावें ।
सतगुरू प्यारे हम्हें पुकारें, सत्संग में आ जाओ तुम ।
सच्चे साहिब को पाओ तुम, सच्चे साहिब को पाओ तुम ।। छोड़ दे बंदे

छोड़ दे बंदे 'मैं' मेरी तूं – 2, साहिब सत्संग आया कर ।
मौत तेरे सर पे खड़ी है, व्यर्थ ना समय गंवाया कर – 2 ।।

–0–

भजन 76

मेरा साहिब प्रीतम प्यारा है, सच्चा सखा वो ही हमारा है।
सब नाते जग के झूठे हैं, ईक वो अविनाशी हमारा है ।।

1 करोड़ों जन्मों से हम हैं बिछड़े हुए,
साहिब को पाए बिन कहां गुज़ारा है ....मेरा साहिब प्रीतम –
2 जन्मों जन्मों से हैं सोए हुए,
माया तृष्णा में हैं खोए हुए ....मेरा साहिब प्रीतम –
3 हर जन्म में हम्हें परिवार मिला,
जिसकी मोह माया में साहिब भूला ....मेरा साहिब प्रीतम –
4 हर महा प्रलय तक सात मानव जन्म मिले,
पशु पक्षी पेड़ पर्वत कंई बार बने ....मेरा साहिब प्रीतम –
5 जन्मों जन्मों तूने कंई प्राणियों को खाया है,
कर्म फल ने तुझे घौर सताया है ....मेरा साहिब प्रीतम –
6 कर्म बंधन न तेरे खत्म हुए,
ज्यों ज्यों यत्न किए ये बड़ते गये ....मेरा साहिब प्रीतम –
7 पूजा अर्चना तप–सजदे किये,
जग के मेवे और ओहदे मिले ....मेरा साहिब प्रीतम –
8 पूजा पाठ ध्यान जितने किये,
स्वर्ग मिले पर मौक्ष ना मिले ....मेरा साहिब प्रीतम –
9 अब की बार हैं सच्चे गुरू मिले,
मेरे साहिब हैं जिनमें समाये हुए ....मेरा साहिब प्रीतम –
10 सतगुरू चरणों में शीष नवाया कर,
खुद ही समर्पित हो जाया कर ....मेरा साहिब प्रीतम –
11 सतगुरू से सार नाम पाएगा,
तेरा कर्म जाल कट जाएगा ....मेरा साहिब प्रीतम –
12 अष्टम चक्र में जो ध्यान लगाएगा,
साहिब के गुरू रूप में दर्शन पाएगा ....मेरा साहिब प्रीतम –
13 सतगुरू तुझे हंस बनाएंगे,
निजघर सतलौक ले जाएंगे ....मेरा साहिब प्रीतम –

मेरा साहिब प्रीतम प्यारा है, सच्चा सखा वो ही हमारा है।
सब नाते जग के झूठे हैं, ईक वो अविनाशी हमारा है ।।

–0–

भजन 77

मेरे साहिबा हैं भव पार
अब की बार ओ मेरे सतगुरू
ले चलो पार मौक्ष द्वार

1 मोह माया ने – सब को भरमाया – 2
भूला में खुद को – सब कुछ लुटाया – 2
सोया हूं मैं मुझे जगाओ – पार लगाओ ....मेरे साहिबा हैं –

2 कौन है अपना – कौन पराया – 2
इन बंधनों को – समझ ना पाया – 2
इन नातों से मुझे बचाओ – पार लगाओ ....मेरे साहिबा हैं –

3 जग की माया – मन को है भाए – 2
वासना तृष्णा – मुझे सताए – 2
मुझे उभारो पार लगाओ – पार लगाओ ....मेरे साहिबा हैं –

4 हर बार जम के – मरता रहा मैं – 2
करोड़ों बार मर के भी – मरना समझ ना पाया – 2
मुझे समझाओ पार लगाओ – पार लगाओ ....मेरे साहिबा हैं –

5 निराकार ने –जग को बनाया – 2
जीव में मन रूप समाया – सब को भरमाया – 2
इस भ्रम से मुझे बचाओ – पार लगाओ ....मेरे साहिबा हैं –

6 जब से सतगुरू – शरणी आया – 2
सुरति सूं – सार नाम है पाया – 2
सोया था मैं – गुरू ने जगाया ....मेरे साहिबा हैं –

7 सतगुरू ने हम्हें – हंस बनाया – 2
सुरति से आत्म – रूप जगाया – 2
सच्चे साहिब से दे मिलवाया – दे मिलवाया ....मेरे साहिबा हैं –

मेरे साहिबा हैं भव पार
अब की बार ओ मेरे सतगुरू
ले चलो पार मौक्ष द्वार

–0–

भजन 78

मंदिर मस्जिद गिरजे गुरूद्वारे – डूंढू मैं साहिब रे
पूजा सजदे शीश नवाए – पर मिलें ना साहिब रे

1 फूल चढ़ाए तिलक लगाए – देवों के आगे शीष नवाए
आशा तृष्णा बड़ती जाए – जन्म मरन में दे उलझाए.... कैसे मिलेंगे ––

2 नमाज़ी बन शीष नवाए – हज करके हाजी कहलाए
सजदे करके उसको रिझाएं – उसके जीवों को मार खाएं .... कैसे मिलेंगे –

3 गिरजे जाके कौरल गाएं – पाप करें और पाप बख़्शाए
जीवन साथी का संग ना निभाएं – भौग करें मालिक भूल जाए ....कैसे मिलेंगे–

4 मुल्ला पादरी पाई पंडित – अपने रस्ते को श्रेष्ठ बताएं
भोले भाले सब प्राणियों को – कर्म बंधन में दें उलझांए.... कैसे मिलेंगे ––

5 दर दर भटकूं शीष निवाऊं – सच्चे दिल से अलख जगाऊं
आस बंधे और टूट जाए – पर मिले ना साहिब रे .... कैसे मिलेंगे ––

6 जब से सच्चे सतगुरू पाए – उनकी शरण में शीष झुकाएं
सार नाम का अमृत पांए – जन्म जन्म की पिपासा बुझाऐं ....कैसे मिलेंगे––

7 वे नाम जी सतगुरू हमारे – सत्संग में अमृत बरसाएं
आशा तृष्णा को दें मिटाए – परम पुरूष से दें मिलवाऐं
लौट के मृत्यू लौक ना आएं – ऐसे मिलेंगे साहिब रे
ऐसे मिलेंगे साहिब रे – ऐसे मिलेंगे साहिब रे

मंदिर मस्जिद गिरजे गुरूद्वारे – डूंढू मैं साहिब रे
पूजा सजदे शीश नवाए – पर मिलें ना साहिब रे

–0–

भजन 79

सतगुरू तेरे चरणों में, जो शरण मुझे मिल जाए।
माया मोहिणी ने झकड़ा मुझे, मेरी नींद तो खुल जाए।।

1 जब से मैनें जन्म लिया, भाई बन्धु अपने लगे
मां की ममता प्यारी लगे, मेरी नींद तो और बड़े .... सतगुरू तेरे –

2 देवी देवों की पूजा की, मन वांछित फल पाए
ज्यों ज्यों जग की माया मिली, आशा तृष्णा और बड़ी .... सतगुरू तेरे –

3 दुखी कुण्ठित बैठा हूं, जग को पाने की चाह में
मेरी धन दौलत जो बड़ी, संगी वैरी लगने लगे .... सतगुरू तेरे –

4 खुशियों की चाह में, दुख मैनें एकत्र किए
अपनी तो खुशी भाए, दूजे का दुख दुख ना लगे .... सतगुरू तेरे –

5 माया मोहिणी प्यारी लगी, यह भूल ही बैठा मैं
खाली हाथ मैं आया था, खाली हाथ ही जाऊंगा .... सतगुरू तेरे –

6 यह मन बड़ा चंचल है, हर पल मुझे तड़पाए
तेरी शरण जो आना चाहूं, राह बाधा बन जाए .... सतगुरू तेरे –

7 सतगुरू तेरी ओट जो मिल, मैं भी साधक बन जाऊं
छोड़ मन मोहिणी माया, तेरी शरणी आ जाऊं .... सतगुरू तेरे –

8 मेरे गुरू की वाणी महान, सत्संग में अमृत बरसाए
जो भी ईक सत्संग सुने, फिर मानव तन पाए .... सतगुरू तेरे –

9 मेरे सतगुरू की महिमां महान, जिन में साहिब आप बसें
जो भी चरण शरण आए, वही साधक तर जाए .... सतगुरू तेरे –

सतगुरू तेरे चरणों में, जो शरण मुझे मिल जाए।
माया मोहिणी ने झकड़ा मुझे, मेरी नींद तो खुल जाऐ।।

–0–

भजन 80

जित देखूं तूं ही तूं साहिबा, हर सूं में तूं ही तूं साहिबा
हर रंग रूप में तूं साहिबा – 2

1 तुझे मुख से जपा तो पाया क्या
जो मन से जपा भरमाया गया
निराकार के काल जाल फंसा .... हर रंग रूप——

2 करोड़ों जन्मों से मैं भटका फिरा
मन भक्ति में ही रमा रहा
स्वर्ग मिला पर मौक्ष ना मिला .... हर रंग रूप——

3 देवी देवों ग्रंथों को पूजा
तेरा भेद फिर भी ना पाया गया
महाकाल के मृत्यु लौक फंसा .... हर रंग रूप——

4 जग गुरूओं की शरणी पड़ा रहा
निराकार के रूपों में फंसा
मृत्यु लौक में जम जम मरता रहा .... हर रंग रूप——

5 जब से सतगुरू को पाया है
तेरा भेद समझ में आया है
मेरे सतगुरू में तूं समाया है .... हर रंग रूप——

6 वे नाम जी जग को जगाने आए हैं
मेरे सतपुरूष जिन में समाए हैं
साहिब महिमां की अलख जगाए हैं
गुरूमुखों को साहिब दर्शाए हैं .... हर रंग रूप——

जित देखूं तूं ही तूं साहिबा, हर सूं में तूं ही तूं साहिबा
हर रंग रूप में तूं साहिबा – 2

—0—

भजन 81

साहिब सूं प्रीति करूं, जिन का जानूं ना मैं भेस – 2
मंदिर मस्जिद ना मिले, वो जाने ना पता संदेस – 2

1 हिन्दु जम मन्दिर गया, देवी देवों से की प्रीत – 2
जप तप तीर्थ किए, किए हवन उपवास – 2
सच्चे साहिब का पता नांहि जग जग मिलन की आस .... साहिब सूं –
2 मुस्लिम जम मस्जिद गया, मुल्लां पढ़े कुराण – 2
खुदा को तो सजदे करे, करें पशु कुरबान – 2
खुद तो खुदा की संतान, बाकी काफ़िर मान .... साहिब सूं –
3 ईसाई जम गिरजे गया, सुना बाईबल संदेस – 2
सुख साधन सारे भौगे, भूला यशु उपदेश – 2
जग मालिक को भूल गया, करे सदा भौग विलास .... साहिब सूं –
4 सिख बन गुरूद्वारे गया, रटा ग्रन्थ उपदेश – 2
ग्रंथ को तो सजदे किए, भूले गुरू उपदेश – 2
गुरूबानी का तो कीर्तन करें, करें ना राम की बात .... साहिब सूं –
5 राम कृष्ण खुदा ईश्वर, निराकार के सब रूप – 2
निराकार ने जग को रचा, धरे ये सारे रूप – 2
हर मानव इनमें फंसा, जाने ना साहिब का रूप .... साहिब सूं ––
6 मन माया आशा तृष्णा, लौभ क्रौध अहंकार – 2
कल आज और काल, महांकाल विक्राल – 2
सारा जग इनमें पड़ा, यही है मन निराकार .... साहिब सूं ––
7 वे नाम जी सूं पाया, सार उपदेश – 2
छूटा महाकाल का, निंद्रा देश – 2
सार नाम हृदय धरा, छूटा महाकाल विकराल .... साहिब सूं ––

साहिब सूं प्रीति करूं जिन का जानूं ना मैं भेस – 2
मंदिर मस्जिद ना मिले वो जाने ना पता संदेस – 2

–0–

भजन 82

छोड़ दे बंदे तेरी मेरी, ये जग जन्म मरन की फेरी
कब छोड़ेगा लगाना फेरी, क्युं करता है मैं और मेरी

1 पैदा हुआ मां की ममता में सोया, मोह माया निरंकार का होया
गर्भ में किए साहिब मिलन के वादे, जग माया में सब भूल गया तूं ....छोड़ दे बंदे –

2 छोटी उम्र है पढूंगा लिखुंगा, पूजा भजन जवानी में करूंगा
तन ये जवां है मन में उमंग, साहिब भजन बुढ़ापे में करूंगा ....छोड़ दे बंदे –

3 बचपन तूने खेल गवाया, गई जवानी बुढ़ापा आया
तन कमलाए रोग सताए, अब भजन किया ना जाए .... छोड़ दे बंदे –

4 छल कपट मेहनत लगन से, कमा ली माया बहुत यत्न से
खूब कमाया बहुत बड़ाया, कुछ भी तेरे काम ना आया ....छोड़ दे बंदे –

5 प्राण ये निकले मृत्य पड़ा है, घर में न रक्खे तूं प्रेत बड़ा है
रोएं चिल्लाएं नऐ नऐ कपड़े तुझे पहनाऐं, जा के शमशान फूंक के आएं ....छोड़ दे बंदे

6 संगी साथी सज्जन प्यारे, छोड़ आएं जलती चिखा पे
बन बैठा है राख की ढेरी, अब सोचे क्युंकि मैं और मेरी ....छोड़ दे बंदे –

छोड़ दे बंदे तेरी मेरी ये जग जन्म मरन वाली फेरी
कब छोड़ेगा लगाना फेरी क्युं करता है मैं और मेरी
–0–

भजन 83

साहिब जी .... तुम बिन हम अधूरे,
सतगुरू जी .... तुम बिन हम अधूरे
परमहंस जी .... तुम बिन हम अधूरे

1 जीने को तो सब जी रहे
सब मोह माया की नींद सो रहे .... साहिब जी तुम –
2 भक्ति तो सारे जग वाले कर रहे
पर भौग ही भौग मांगे जा रहे .... साहिब जी तुम –
3 सब सुबह से शाम किए जा रहे,
पर अनमोल मानव जीवन गंवा रहे .... साहिब जी तुम –
4 पूरी लगन से माया सब कमा रहे,
कहने को मेरी तेरी सब चौकीदारी निभा रहे .... साहिब जी –
5 दान पूजा दिखावा सब कर रहे,
अपने जन्म मरन के जाले बुने जा रहे .... साहिब जी तुम –
6 अच्छे बुरे कर्म सब किए जा रहे,
सब आशा तृष्णा में मारे जा रहे .... साहिब जी –
7 मां बाप बीवी बच्चों को परिवार बता रहे,
पर हर जन्म में परिवार बदले जा रहे .... साहिब जी –
8 माया कमावे खावे माया इक्कट्ठी करे,
माया में जीवे माया में मरी जा रहे .... साहिब जी –
9 संत सतगुरू परमहंस वे नाम जी,
कृपा सिंधु ना जगाते, तो हम भी माया में थे मरी जा रहे .... साहिब जी –
10 सत्संग में प्रवचन अमृत बरसा रहे,
हम्हें वे नाम जी सतपुरूष नज़र आ रहे .... साहिब जी –

साहिब जी .... तुम बिन हम अधूरे
सतगुरू जी .... तुम बिन हम अधूरे
परमहंस जी .... तुम बिन हम अधूरे

–0–

भजन 84

सब फंसे माया के जाल, निज को ना जाने
हाड मास की काया नहीं, तूं तो हंस महान निज को ना जाने – 2

`

1 सभी ने जग में गुरू हैं कीने
छूटे ना क्रौध अहंकार – साहिब जी –
छूटे ना क्रौध अहंकार .... निज को ना जाने –

2 सब ही मन की सेव कमावें
कैसे उतरें पार साहिब जी–
कैसे उतरें पार – निज को ना जाने –

3 गुरू चेला सब माया कमावें
भक्ति बनी व्योपार साहिब जी –
भक्ति बनी व्योपार – निज को ना जाने –

4 प्रभु भक्ति में सब माया कमावें
सो सब डूबनहार साहिब जी –
सो सब डूबनहार – निज को ना जाने –

5 जग माया की मांग ना करना
मांगन मरन समान साहिब जी –
मांगन मरन समान – निज को ना जाने –

6 सच्ची श्रद्धा जब भी उपजे
मिले पूर्ण सतगुरू द्वार साहिब जी –
पूर्ण सतगुरू द्वार – निज को ना जाने –

7 जिन सतगुरू पंच निरमाए
वोहि सार सब्द को पांऐ साहिब जी –
सार सब्द को पांऐ – निज को ना जाने –

8 सार सब्द सतपुरूष जी वासा
सुरति सूं सिमरा जाए साहिब जी –
सुरति सूं सिमरा जाए – निज को ना जाने –

9 परमहंस वे नाम जी आए
सार सुरति जहाज हैं लाए साहिब जी –
सार सुरति जहाज हैं लाए – निज को ना जाने –

10 जो भी उनकी शरणी आवे
उतरे भवनिधि पार साहिब जी –
उतरे भवनिधि पार – निज को ना जाने –

सब फंसे माया के जाल, निज को ना जाने
हाड मास की काया नहीं, तूं तो हंस महान निज को ना जाने –

–0–

भजन 85

हो अकड़ के चलने वाले मानव – ईक दिन तूं मर जाना – 2
आज ना समझे मर जाने पे – तूने है पछताना – 2

1 जीवन भर मस्त रहा तूं
सतगुरू द्वार ना जाना – 2
मृत हुआ संत महिमां जाना
तब पड़े पछताना – 2 .... हो अकड़ के –

2 संगी साथी सज्जन प्यारे
है माया जाल पुराना – 2
हर जन्म नये रिश्ते नाते
छूटे संग पुराना – 2 .... हो अकड़ के –

3 नशे करे जीवों को खाए
ईक दिन, काल ने तुझ को खाना – 2
चौकीदारा छौड़ जग माया
है सब कुछ छौड़ के जाना – 2 .... हो अकड़ के ––

4 हर जन्म निरंकार को पूजा
मिला ना मौक्ष ठिकाना – 2
स्वर्ग नर्क कई बार हैं भौगे
फिर जमना मर जाना – 2 .... हो अकड़ के ––

5 परम हंस वे नाम जी आए
उनकी शरण पड़ेगा आना – 2
बिन सतगुरू शरणी जाए
मिले ना मौक्ष ठिकाना – 2 .... हो अकड़ के ––

हो अकड़ के चलने वाले मानव – ईक दिन तूं मर जाना – 2
आज ना समझे मर जाने पे – तूने है पछताना – 2

–0–

भजन 86

सब्द बिन भूला फिरे संसार – 2
सब्द ही काटे माया जाल
सब्द सूं उतरो भव जल पार – 2

1 देवी देवों की पूजा कीनी
मांग मांग कर माया लीनी
सो सब डूबन हार –– साहिब जी –

2 माया कमावें माया खावें
माया सूं दुखी संसार
कैसे उतरें पार –– साहिब जी –

3 जग माया की मांग ना करना
मांग को तज के जीवन जीना
मांग चौरासी का जाल —— साहिब जी —

4 माया ने हंसा आत्म कीना
आत्म को तन मन है दीना
छूटे ना माया जाल —— साहिब जी —

5 ऋषि मुणि योगी जन सारे
मन भक्ति में जीवन गुज़ारे
स्वर्ग मिले — मिले ना मौक्ष द्वार —— साहिब जी —

6 नर नारी दवैत काया बनाई
काम क्रौध ने मति भरमाई
दवैत ही माया जाल — साहिब जी —

7 परम हंस वे नाम जी आए
सार सब्द की दात को लाए
सुरति सू सिमरी जाए — साहिब जी —

8 जो जन उनसे दात ये पाए
सिमर के वो हंस बन जाए
सोहि उतरे पार — साहिब जी —

9 सब्द की महिमां मैं क्या गाऊं
सब्द तो अपरम्पार साहिब जी — 2
जो सिमरे सो पार — साहिब जी —

सब्द बिन भूला फिरे संसार — 2
सब्द ही काटे माया जाल
सब्द सूं उतरो भव जल पार — 2

—0—

भजन 87

सदा सुखों को चाहने वाले मानवा
ये तन ही दुखों की खान है – 2

1 तूं पल पल सपनों में रहता है
ना जाने क्या क्या है मांगता – 2
ईक मांग जैसे तेरी पूर्ण हुई
दस मांगों की श्रृंखला तैयार हुई –– सदा सुखों को –
2 देवी देवों की भक्ति जो तूने की
कई मांगों की कड़ियां बनती गईं – 2
तेरे जन्म पे जन्म खत्म हुए
आषा तृष्णा ना तेरी खत्म हुई –– सदा सुखों को –
3 जब कर्म कौष तेरा खाली हुआ
हर मांग तेरी ठुकरा दी गई – 2
अब दुखों का पहाड़ है टूट पड़ा
तुझे अपनी सुद्ध बुद्ध कहां रही –– सदा सुखों को –
4 लाखों जन्मों से सोया सपनों में
माया नींद में है तूं खोया हुआ – 2
मानव जन्म बड़ा अनमोल तेरा
सोए सोए इसे ना व्यर्थ गवा –– सदा सुखों को –
5 छौड़ मैं मेरी आशा तृष्णा को
छौड़ मन माया अभिलाषा को – 2
पूर्ण सतगुरू शरणी में 'मै' को मिटा
साहिब कृपा सूं सुरति अमृत पा –– सदा सुखों को –
6 पूर्ण सतगुरू वे नाम पधारे हैं
सब जीवों को तारन हारे हैं – 2
उनकी कृपा को जो जन पाएगा
वो हंस बन सतलौक जाएगा । सदा सुखों को –

सदा सुखों को चाहने वाले मानवा
ये तन ही दुखों की खान है – 2

–0–

भजन 88

इतनी मेहर करना मेरे साहिबा।
मेरी सुरति में तुम सदा रहो।।

1 मैं माया में था खोया हुआ,
गहरी नींद में था सोया हुआ।
तूने माया नींद से है जगा दिया,
मेरी सुरति में तुम सदा रहो।। इतनी मेहर –

2 आशा तृष्णा ने था घेरा हुआ,
काम क्रोध के रंग में था रंगा।
तूने सार सुरति में रंग दिया,
मेरी सुरति में तुम सदा रहो।। इतनी मेहर –

3 लाखों जन्म से था माया में,
वासना तृष्णा में था डूबा हुआ।
तेरी कृपा से माया छुट गई,
मेरी सुरति में तुम सदा रहो।। इतनी मेहर –

4 मैं मेरी में था खोया हुआ,
निराकार भक्ति में रमा हुआ।
निराकार ने तेरी शरणी सौंप दिया,
मेरी सुरति में तुम सदा रहो।। इतनी मेहर –

5 कैसी अमृत वर्षा तूने की,
अपनी शरणी में मुझे जगह दी।
अमर सुरति प्रेम जगा दिया,
मेरी सुरति में तुम सदा रहो।। इतनी मेहर –

6 इतनी मेहर और करना सतगुरू,
सब जीवों को भी जगा देना।
जो भी तेरी शरणी आ जाए,
उसे मुक्ति मोक्ष दिला देना।। इतनी मेहर –

इतनी मेहर करना मेरे साहिबा।
मेरी सुरति में तुम सदा रहो।।

–0–

भजन 89

तूं पानी में मल मल नहावे, तन की मैल दूर भगावे।
माया मैल उतार बंदेया, आत्म मैल उतार बंदेया।।

1 माया कमावे माया खावें,
माया जीवें माया ही भावें।
पूजा भक्ति में माया ही मांगे,
माया ही महा काल।। साहिब जी, आत्म मैल –

2 मै मेरी का जाल है माया,
देवी देव महांकाल है माया।
अंड मंड भ्रमंड है माया,
माया त्रिलोकि विस्तार ।। साहिब जी, आत्म मैल –

3 माया जाल फंसी आत्म न्यारी,
मन माया तुम एक ही जानो।
निज भूली आत्म बनी लाचारी,
सब करें मन अनुसार।। साहिब जी, आत्म मैल –

4 जग गुरू ग्रंथ गाथा गावें,
माया में डूबें संगत भी डुबावें।
स्वर्ग लोकों को मुक्ति बतावें,
छूटे ना मरन जंजाल ।। साहिब जी, आत्म मैल –

5 परमहंस वे नाम जी आये,
उनकी शरणी जो जन आये।
सार सब्द की दात वो पाये,
जो सिमरे माया पार।। साहिब जी, आत्म मैल –

6 लाखों जन्म तूने व्यर्थ गंवाये,
माया में सोये सोये मर जाये।
अब तो सतगुरू चरणी आ जा,
गुरू का होजा मोक्ष तूं पा जा।
तांहि उतरे आत्म मैल बंदेया ।। साहिब जी, आत्म मैल –

तूं पानी में मल मल नहावे, तन की मैल दूर भगावे।
माया मैल उतार बंदेया, आत्म मैल उतार बंदेया।।

–0–

भजन 90

मैने अपनी मै को तज कर सतगुरू शरणी पा ली है।
सतगुरू सुरति मेह बरसाया, तो ही मै ये भागी है।।

1 छोड़ दे मानव मोहिनी माया, पल पल तुझे भरमाती है।
आत्म तेरी को माया झकड़े, नीच कर्म कराती है – मैने अपनी –

2 मात पिता ये बंधु सारे, मोह का जाल पसारा है।
दौलत माया कंचन काया, तेरी मति भरमाती हैं – मैने अपनी –

3 अब के तज ये आशा तृष्णा, जो आवागमण कराती है।
पूर्ण सतगुरू शरणी आ के, मन माया तजि जाती है – मैने अपनी –

4 लाखों जन्म गंवा कर मैने, पूर्ण सतगुरू पाये हैं।
जन्म जन्म के भाग हैं जागे, जो सतगुरू शरणी पाई है – मैने अपनी –

5 परमहंस वे नाम जी प्यारे, सुरति अलख जगाई है।
जो जन मै को तज के आवे, सो ही अमरपुर जाई है – मैने अपनी –

6 सतगुरू सार सुरति से प्यारो, पिछले लेख मिटाते हैं।
हंसा बन के मोक्ष हैं मिलता, आवागमण कट जाई है – मैने अपनी –

मैने अपनी मै को तज कर सतगुरू शरणी पा ली है।
सतगुरू सुरति मेह बरसाया, तो ही मै ये भागी है – मैने अपनी –

–0–

भजन 91

जग भूला निज रूप को, मोहिनी माया ने भरमाया ।
तूं तो हंसा है प्यारे, हंस लोक से आया रे ।।

1 माया रंग में रंगा प्यारे, आत्म रूप बनाया है – जग भूला –

2 तूं तो साहिबन अंश प्यारे, कहां माया में उलझा रे – जग भूला –

3 जीव भूला हंस रूप को, रिश्ते नातों ने भरमाया – जग भूला –

4 निज आत्म है शक्ति स्वरूप , चंचल मन ने भरमाया – जग भूला –

5 तेरी सुरति से जीवन प्यारे, तेरी सुरति मन वश रे – जग भूला –

6 जग भ्रमण को आया रे, निज को समझे काया रे – जग भूला –

7 ज़र ज़ोरू धन काया, निरंकार की है माया – जग भूला –

8 तज आशा तृष्णा प्यारे, तांहि जन्म मरन पाये रे – जग भूला –

9 सहज सतमार्ग बिन प्यारे, कोई पार ना उतरा रे – जग भूला –

10 पूजा भक्ति में भागे माया, महांकाल ने जग भरमाया – जग भूला –

11 परमहंस वे नाम जी प्यारे, उनकी शरण आ जा रे – जग भूला –

12 सार नाम की दात पा रे, बिन सब्द ना कोई तरे – जग भूला –

13 सतगुरू कृपा बिन प्यारे, कोई पार ना उतरा रे – जग भूला –

14 बेला तरन की आई रे, सतगुरू नौका पे आ प्यारे – जग भूला –

15 मेरे सतगुरू शरणी आ रे, हंस बन निजघर जा रे – जग भूला –

जग भूला निज रूप को, मोहिनी माया ने भरमाया ।
तूं तो हंसा है प्यारे, हंस लोक से आया रे ।।

–0–

भजन 92

हे माया धारी आत्म रे, क्युं दुर्गति हुई तुम्हारी।
निज को तूं काया समझे, तूं तो है साहिबन अंश प्यारी।।

1 जग भ्रमण को तूं आया,
तुझे भा गई मोहिनी प्यारी। तां दुर्गति हुई तुम्हारी – २

2 मन माया है निर्जीव काया,
तेरी सुरति सूं चेतन दुनियां सारी । तां दुर्गति हुई तुम्हारी – २

3 तेरी सुरति सूं मन है राजा,
तूं बन बैठा भिखारी। तां दुर्गति हुई तुम्हारी – २

4 भक्ति में मांगे माया,
ईक्कटठी कर ली धन दौलत बंगला गाड़ी। तां दुर्गति हुई तुम्हारी – २

5 निज को आत्म भूली,
निभाये जग मायावी रिश्तेदारी। तां दुर्गति हुई तुम्हारी – २

6 जब आये मोत तुम्हारी,
यहीं रह जाये धन दौलत रिश्तेदारी। तां दुर्गति हुई तुम्हारी – २

7 मेहनत ठगी से ईक्कटठी माया,
संग ना जा पाये तुम्हारी । तां दुर्गति हुई तुम्हारी – २

8 देव भक्ति से स्वर्ग मिले,
छूटे ना जन्म मरन की यारी । तां दुर्गति हुई तुम्हारी – २

9 तूं तो है हंसा प्यारी,
मन वश पड़ी बनी लाचारी । तां दुर्गति हुई तुम्हारी – २

10 जीवन मिला अनमोल है प्यारे,
निस्वार्थ भक्ति में लगा रे । तां कटे दुर्गति तुम्हारी – २

11 वे नाम परमहंस जी प्यारे,
अब की तूं शरणी आ रे। तां कटे दुर्गति तुम्हारी – २

12 मै मेरी का भ्रम तज प्यारे,
सतगुरू से सब्द को पा रे। तां कटे दुर्गति तुम्हारी – २

13 सुरति से सिमर दात को प्यारे,
जन्म जन्म का लेखा मिटा रे। तां कटे दुर्गति तुम्हारी – २

14 कटे भव बंधन तेरे प्यारे,
सुरति से साहिबन दर्स पा रे। तां कटे दुर्गति तुम्हारी – २

15 जीते जी मोक्ष पा रे,
हंसा बन निजघर जा रे। तां कटे दुर्गति तुम्हारी – २

हे माया धारी आत्म रे, क्युं दुर्गति हुई तुम्हारी।
निज को तूं काया समझे, तूं तो है साहिबन अंश प्यारी।।

–0–

भजन 93

जग जीवो प्यारो, परमहंस शरणी पा लो – २

1 मोह माया आशा तृष्णा – २ जग में सबे भरमायो। जग जीवो –

2 रिश्ते नाते परिवार सम्बंधी – २ हर जन्म तुझे उलझायो। जग जीवो –

3 जगत पूजा है मन की पूजा – २ काम क्रौध ना छुट पायो। जग जीवो –

4 बिन माया मै को त्यागे – २ जन्म मरन ना छुट पायो। जग जीवो –

5 जब से मैने मै को त्यागा – २ निज भीतर झांक पायो। जग जीवो –

6 निज भीतर तेरे देव बसत हैं – २ साहिबन सुरति समायो। जग जीवो –

7 सतगुरू शरणी सुरति अमृत – २ सुरति में सब्द समायो। जग जीवो –

8 मन है तेरा काल निरंझन – २ बार बार भरमायो। जग जीवो –

9 परमहंस वे नाम जी प्यारे – २ साहिबन उनमें समायो। जग जीवो –

10 सतगुरू बांटें सार रस धारा – २ साहिबन जिसमें समायो। जग जीवो –

11 जाकि सुरति सतगुरू बसत हैं – २ सुरति सूं निजघर जायो। जग जीवो –

12 सुरति सूं आत्म हंस बनत है – २ सुरति सूं साहिब समायो। जग जीवो –

जग जीवो प्यारो, परमहंस शरणी पा लो – २

–0–

भजन 94

सतगुरू सुरति रंग चढ़यो,
संसारी रंग अब ना चढ़े।
नाम प्याला मैने पिया,
के माया रंग कैसे चढ़े।।

1 मन काया निरंकार है दीनी,
मोहनी माया संग काल है दीनी – २
अब सार रंग रस चढ़यो,
के तृष्णा रंग कैसे चढ़े। के माया रंग –

2 संगी साथी सज्जन प्यारे,
दुश्मन वैरी शैतान सार – २
आत्म उल्झायें मिल ये सारे,
माया के हैं सब रंग न्यारे। के माया रंग –

3 जग माया में सब डूब मरें,
जम जम के ये मरते रहे – २
बिन सतगुरू ये कैसे तरें,
सतगुरू शरणी तुझे मोक्ष मिले। के माया रंग –

4 छोड़ दे बंदेया मैं और मेरी,
त्रिलोकि तो है कैद ये तेरी – २
हंसा भरमाने खेल ये सारा,
बिन सतगुरू कोई समझ ना पावे। के माया रंग –

5 जग गुरूओं ने आत्म भरमाया,
निरंकार को ही प्रभु बताया – २
निरंकार काल जाल कहलाया,
वे नाम काल भ्रम दूर भगायें। के माया रंग –

6 मानव चोला अनमोल तेरा,
बिन सतगुरू यत्न फेल है तेरा – २
सतगुरू वे नाम जहाज हैं लाये,
प्यारो चढ़ो सतलोक को जायें। के माया रंग –

7 सुरति सूं सब हंसा आये,
शब्द सूं सब देव प्रकटाये – २
सार सागर वे नाम जी लाये,
सोये जीव उठ गोता मार। के माया रंग –

8 वे नाम सुरति मेह बरसायें,
सारे साधक रज रज नहायें – २
जो जन शरणी नां आ पाये,
चौरासी में अति कष्ट पाये। के माया रंग –

9 परमहंस शरणी मोक्ष मिले,
साहिब सतगुरू वे नाम जी आय – २
छोड़ अहम तूं शरणी आ जा,
भव को तज के मोक्ष तूं पा जा। के माया रंग –

सतगुरू सुरति रंग चढ़यो,
संसारी रंग अब ना चढ़े।
नाम प्याला मैने पिया,
के माया रंग कैसे चढ़े।।
–0–

भजन 95

प्रेमी बन कर प्रेम में, साहिबन महिमां गाया कर।
साहिबन सतगुरू रूप हैं, सुरति सूं दर्स पाया कर।।

1 प्रेम प्रेम जग भी करे, आशा तृष्णा में मरे।
दो शरीरों का प्रेम ना, स्वार्थ सिद्धी वासना रे।। प्रेमी बन कर –
2 जो जीवों जीवों को मार खाये, वो जीते जी प्रेत रे।
दूजों के जो प्राण हरे, वो किसी से ना प्रेम करे।। प्रेमी बन कर –
3 शंका संदेह ने सब को घेरा, कोई किसी का ना प्रेमी रे।
हर तन में है अहम भरे, जग मतलबी ना प्रेम करे।। प्रेमी बन कर –
4 माया प्रेमी लोभी रे, स्वार्थ सिद्धी में हैं पड़े।
प्रेमी प्रेम में सब त्यागे, माया त्यागे तो हंसा रे।। प्रेमी बन कर –
5 मां बचे का प्रेम रे, अबोध है प्रेम प्रीत प्यारे।
जवानी में प्रेम अंधा रे, वासना जब तो प्रेम कहां रे।। प्रेमी बन कर –
6 वासना कामी जग प्राणी, स्वार्थी क्रौधी लोभी रे।
प्रेमी प्रेम में सब त्यागे, लोभी कैसे प्रेम करे।। प्रेमी बन कर –
7 जीव सुरति जग माया में, कैसे जाने निज हंसा रे।
सतगुरू शरणी सब्द सुरति रे, बिन सब्द ना कोई प्रेमी रे।। प्रेमी बन कर–
8 सुरति सूं मन मान मिटे, मान मिटे तहां भक्ति रे।
सब्द में साबिन वास रे, सब्द ही आत्म हंसा करे।। प्रेमी बन कर –
9 सतगुरू साहिबन रूप हैं, साहिब परमानंद प्रेम प्यारे।
हंसा प्रेम की ज्योति है, परम पुरूष में जा मिले।। प्रेमी बन कर –

प्रेमी बन कर प्रेम में, साहिबन महिमां गाया कर।
साहिबन सतगुरू रूप हैं, सुरति सूं दर्स पाया कर।।

–0–

भजन 96

ओ बंदेया, समझ कियां नी आना ई,
सब छडी कै पैसी जाना ई।

1 कियां करनाऐं मेरी तेरी,
जग जन्म मरन दी ऐ फ़ेरी – ओ बंदेया –

2 जग माया ई आनी जानी,
तुकी गल समझ नीं आनी – ओ बंदेया –

3 तूं छोड़ दे चतुर चलाकी,
ऐरा फ़ेरी तै बईमानी – ओ बंदेया –

4 इत्थै जो वी पयायें तूं करना,
अग्गै जाई कै पैसी परना – ओ बंदेया –

5 रिश्ते नाते संगी साथी,
तेरे जीने ने ऐन बराती – ओ बंदेया –

6 कुसै संग तेरे नीं जाना,
तूं मरी कै कलेयां जाना – ओ बंदेया –

7 मरें योगी यति राजा रानी,
तूं वीं दुनियां छोड़ी कै जानी – ओ बंदेया –

8 लखां जन्म लेई लेई तूं मरया,
मेरा तेरी नां लड़ नां छडेया – ओ बंदेया –

9 समझी लै तूं माया कहानी,
उन जन्म नां व्यर्थ गवांवी – ओ बंदेया –

10 देवी देवां नी करनांऐं पूजा,
मगों मगं नीं भक्ति पूजा – ओ बंदेया –

11 इत्थै जो वी पाया गवाया,
सब मोहनी माया नीं छाया – ओ बंदेया –

12 तूं तड़फें तै रौवें चिल्लायें,
प्रालब्ध तूं बची नां पायें – ओ बंदेया –

43 चंगे माड़े तूं कर्म कमायें,
तांई सुख दुख जग विच पायें – ओ बंदेया –

14 इस जन्म नां कर नादानी,
सतगुरूां नी शरणी आ नी – ओ बंदेया –

15 माया छोड़ी शरणी आ नी,
सतगुरूां नां होई सब पा नी – ओ बंदेया –

16 छोड़ी मोहनी माया कहानी,
तरन दी बेला फिर नीं आनी – ओ बंदेया –

17 परम हंस वे नाम जी प्यारे,
दुखियां दे ने तारन हारे – ओ बंदेया –

18 जन्म मरन नां कटन गुरू लेखा,
तेरा मिटै कष्ट क्लेशा – ओ बंदेया –

19 सार दात सिमर लै भाई,
तेरा आवागमण मिट जाई – ओ बंदेया –

20 जो सत सुरति चित्त लाई,
सतगुरू संग निजघर जाई – ओ बंदेया –

21 सतगुरू ही हंस बनावन,
पूर्ण मुक्ति मोक्ष दिलावन – ओ बंदेया –

ओ बंदेया, समझ कियां नी आना ई,
सब छडी कै पैसी जाना ई।

–0–

भजन 97

महांकाल के पंझे से, बिरला ही कोई बचे।
माया भ्रम में फंसा प्यारे, व्यर्थ जीवन गंवाये रे।।

1 लाखों जन्मों से सोया पड़ा, माया में ही जीवे मरे।
जग नातों के चक्कर में, निज रूप को भूला रे।। महांकाल के –

2 ज़र ज़ोरू धन माया, कमा कमा घर बनाया रे।
जीवन भर के यत्न तेरे, अंत खाली हाथ जाये रे।। महांकाल के –

3 सारे जीवन के यत्न से प्यारे, रिश्ते नातों को पाला रे।
कर्मण गठरी संग तेरे, भौग भौग के जिये मरे।। महांकाल के –

4 कहने को सब अपने तेरे, कोई संग ना जाये रे।
अपने किये खुद भौगे, अकेला आया अकेला ही जाये रे।। महांकाल के –

5 जग रिश्ते नाते सारे, तुझसे कैसा प्रेम करें।
जैसे ही तूं प्राण तजे, प्रेम तज तुझे ही फूंकें।। महांकाल के –

6 देवी देवों की भक्ति से, आवागमण ना तेरा मिटे।
जगत गुरू सब भ्रमित करें, मन तरंग में सब बहें।। महांकाल के –

7 परमहंस की शरणी आके, आशा तृष्णा तज प्यारे।
बिन सतगुरू कृपा प्यारे, मन मान ना जाये रे।। महांकाल के –

8 सहज सतमार्ग आ प्यारे, परमहंस सूं दात पा रे।
सुरति सूं सब्द ध्या प्यारे, मन माया तरंग मिटे।। महांकाल के –

9 सतगुरू सब को पुकारें, बेला तरन की आई रे।
कोई बिरला ही शरणी आवे, माया तज मोक्ष पाये रे।। महांकाल के –

महांकाल के पंझे से, बिरला ही कोई बचे।
माया भ्रम में फंसा प्यारे, व्यर्थ जीवन गंवाये रे।।

–0–

भजन 98

जग मिथ्या ईक झूठा सपना, मोह माया आशा व तृष्णा।
संगी साथी सज्जन प्यारे, ज्युं ही मरे तो कोई ना अपना।।

1 झूठे जग को अपना कह कर, सतगुरू महिमां जान ना पाया।
प्राण तजे तो सत्त यह जाना, गुरू बिन जग में कोई ना अपना।। जग मिथ्या –

2 अनमोल मानव जन्म को पाकर, विषय वासना में व्यर्थ गंवाया।
काम भौग का दासा बन कर, व्यर्थ गंवाया जीवन अपना।। जग मिथ्या –

3 पूजा पाठ भजन और कीर्तन, मांग पूर्ती का बने है साधन।
कमा कमा कर भौग है भौगा, भौग की चाह में तजे तूं जीवन।। जग मिथ्या –

4 पूजा सजदे माया दिलावें, कभी ना जीव मुक्त हो पावे।
मै मेरी मन मान को तज दे, तांहि मिले रे सतगुरू सांचा।। जग मिथ्या –

5 सतगुरू रूप साहिब पधारे, परमहंस वे हूं जी प्यारे।
मान तज तूं शरणी आजा, बिन सतगुरू कोई ना अपना।। जग मिथ्या –

6 सतगुरू देवें नाम प्यारा, चौरासी बंधन काटन हारा।
जो जन सतगुरू सुरति चित्त लावे, परम पद मोक्ष वो पावे।। जग मिथ्या –

7 बिन सतगुरू जग माया सारा, जन्म मरन का खेल पसारा।
जीते जी तूं शरणी आजा, मानव जीवन तूं सफल बना जा।। जग मिथ्या –

8 साधक कहे चिल्ला चिल्ला के, सतगुरू सांचा जगत है सपना।
जीते जी तूं शरणी आजा, मानव देह बिन तरे ना कोये।। जग मिथ्या –

जग मिथ्या ईक झूठा सपना, मोह माया आशा व तृष्णा।
संगी साथी सज्जन प्यारे, ज्युं ही मरे तो कोई ना अपना।।

–0–

भजन 99

सब्द सुरति सूं ध्या ले प्यारे,
जग माया जाल है ।
सतगुरू शरणी बिन,
कोई ना उतरा पार है – २ ।।

1 लाखों जन्म तूने गंवाये,
माया ओड़े माया बिछाये।
पूजा भक्ति में माया ही मांगे,
माया चौरासी जाल है।। सतगुरू शरणी बिन –

2 माया जाल बंधन बंधया,
जम जम के फिर फिर मरया।
आशा तृष्णा में तूं फंसया,
ध्यावे निरंकार है ।। सतगुरू शरणी बिन –

3 मुख माया मन है माया,
देवी देव ईष्ट है माया।
मन सूं भक्ति भी है माया,
सुरति आत्म चाल है।। सतगुरू शरणी बिन –

4 जगत गुरू ग्रंथ गाथा गावें,
पंच शब्द की भक्ति करावें।
मन सूं मन की भक्ति करके,
कोई ना उतरा पार है।। सतगुरू शरणी बिन –

5 पूर्ण सतगुरू वे नाम जी प्यारे,
साहिब सतगुरू रूप पधारे।
मै तज तूं शरणी आ रे,
वो तो सुरति भंडार हैं।। सतगुरू शरणी बिन –

6 जो भी उनसे सार रस पाये,
जन्म जन्म का लेखा मिटाये।
उसके भव बंधन कटे रे प्यारे,
पहुंचे हंसा द्वार रे।। सतगुरू शरणी बिन –

सब्द सुरति सूं ध्या ले प्यारे,
जग माया जाल है ।
सतगुरू शरणी बिन,
कोई ना उतरा पार है – २ ।।

–0–

भजन 100

मैं मेरी में जीने वाले मानवा, तूं कुछ दिन का मेहमान है।
आधा काल बीता तेरा सोने में, आधा माया कमाने खाने में।।

1 नित्त सुबह को तूं तैयार हुआ, भागा दौड़ा माया कमाने को।
थक हार के काम से बोझिल हुआ, रात बिस्तर पड़ा सो जाने को।। मैं मेरी में –

2 खोया बचपन खेलने खाने में, जवानी मौज मस्ती मनाने में।
जब अंतिम घड़ियां मृत्यु की, तृष्णा मोह फंसी संसार में।। मैं मेरी में –

3 ये जग मुसाफिर खाना है, यहां आना लौट के जाना है।
तूं मालिक क्युं बन बैठा है, मरे योगी यत्ति महाराजा हैं।। मैं मेरी में –

4 जग कर्मन प्रालब्ध जाल है, भौग योनि कष्ट विक्राल है।
मन तृष्णा तुझे तड़पाती है, घौर पीड़ादाई नर्क दे जाती है।। मैं मेरी में –

5 जीवन मिला ना व्यर्थ गंवाने को, खाने पीने और मर जाने को।
पूजा भक्ति करे दिखाने को, मन चाहा मधुर फल पाने को।। मैं मेरी में –

6 पूजा भक्ति ना देखा देखी है, ना है माया रूपी फल पाने को।
जग गुरू सब ही भ्रमित करें, भव सागर से कोई ना तरे।। मैं मेरी में –

7 सहज मार्ग के संत उद्यार करें, जग जीवों को भव से पार करें।
जो भी उनकी शरणी आ जावे, सतगुरू ही मन माया पार करें।। मैं मेरी में –

8 अब छोड़ दे तेरी मेरी को, इस आवागमण की फेरी को।
परमहंस वे नाम जी आये हैं, मोक्ष दात भी संग में लाये हैं।। मैं मेरी में –

9 माया तज जो शरणी आ जावे, सब्द पा वो साधक बन जावे।
कोई बिरला ही समर्पण कर पावे, सतगुरू संग परम घर जावे।। मैं मेरी में –

10 जो गुरू का प्यारा हो जाता, वो भव सागर है तर जाता।
आवागमण है उसका मिट जाता, हंस बन वो परम पद पाता।। मैं मेरी में –

मैं मेरी में जीने वाले मानवा, तूं कुछ दिन का मेहमान है।
आधा काल बीता तेरा सोने में, आधा माया कमाने खाने में।।

–0–

भजन 101

ओ बंदेया – कोई वी तेरा ना अपना,
जग मोहनी माया ईक सपना।।

1 माता पिता बहन और भाई,
तेरे भाग्य ने विद्या रचाई – ओ बंदेया –

2 तेरी जोरू जो मन भाई,
अपने लेखे चुकान आई – ओ बंदेया –

3 तूं अकेला जग में आया,
कर्मन गठरी संग में लाया – ओ बंदेया –

4 तूं अकेला मरि कै जाना,
तेरे संग नो कोई जाना – ओ बंदेया –

5 देवी देवां नी करनायें पूजा,
मंगो मंगी नी भक्ति पूजा – ओ बंदेया –

6 धन दौलत जो वी कमायें,
तेरे संग कुछ ना जाये – ओ बंदेया –

7 लखां जन्म लेई लेई तूं मरया,
मोह तृष्णा दा लड़ नई छडया – ओ बंदेया –

8 तूंने जन्म दुर्लभ पाया,
छड मोहनी माया दी छाया – ओ बंदेया –

9 ऐ जन्म व्यर्थ ना गंवा रे,
सतगुरूां दी शरणी आ रे – ओ बंदेया –

10 सत मार्ग दे परमहंस प्यारे,
वे नाम सबां नूं तारनहारे – ओ बंदेया –

11 छड जग मोहनी दा लड़ नी,
सतगुरूां तूं सुरति पा नी – ओ बंदेया –

12 सतगुरू काटन कर्मन लेखा,
तेरा मिटे कष्ट क्लेशा – ओ बंदेया –

13 परमहंस वे नाम जी आये,
मोक्ष दात वी संग हैं लाये – ओ बंदेया –

14 सतगुरूां तूं सब्द पा नी,
सतसुरति विच रम जा नी – ओ बंदेया –

15 सतगुरू दे जहाज ते आ जा,
पूर्ण मुक्ति मोक्ष तूं पा जा – ओ बंदेया –

ओ बंदेया – कोई वी तेरा ना अपना,
जग मोहनी माया ईक सपना।।

–0–

भजन संग्रह

साधकों द्वारा सतगुरू जी के प्रति भजन रूपी श्रद्धा सुमन

(क) क्रम	भजन	पृष्ठ
1	अमृत सार_	1
2	संवेदना	2
3	संदेश	3
4	मूल सार	4
क्रम	भजन	पृष्ठ
1	नाम जपन दा वेला ऐ	6
2	साहिब नाम जप ले प्यारे	7
3	सतगुरां दा प्यार तूं पा लै	7
4	सतनाम सिमर सतनाम	8
5	भक्ति भक्ति करत सब	9
6	मोरा साहिब ही गाता जाये	10
7	आओ सारे सत्संग करिये	10
8	बहुत जन्म गंवायो रे	11
9	ये हमारी खुशनसीबी	12
10	नया जन्म देने वाले	13
11	मेरे साहिब मेरे प्यारे	14
12	सतगुरू निजधाम वाले	14
13	मेरे प्यारे सतगुरू मेरी	15
14	निजधाम जाने वाले	16
15	साहिब का सिमरण किया	17
16	मैनें साहिब की सुरति	18
17	साहिब नाम के हीरे	18
18	मेरे साहिब पधारे हैं	19
19	सोना ऐ दरबार मेरे	20
20	सतगुरू सुरति में ही	22

	क्रम	भजन	पृष्ठ
	21	सतगुरू सतनाम बिना	23
	22	पूर्ण सतगुरू निजधाम से	24
	23	आत्म को छुड़ा लो काल	24
	24	साहिबा मोहे निजधाम ले	25
	25	सार नाम को जानो	26
	26	हे सतगुरू तुम्हें प्रणाम	27
	27	त्रिलोक की माया	28
	28	कदम कदम पर रक्षा	29
	29	साहिब जी की माला	30
(ख)	30	श्वांस श्वांस में	31
	31	श्वांस श्वांस पर साथ	31
	32	पायो जी मैनें	32
	33	छोड़ दे बंदे झूठे	33
	34	सुबह और शाम जेड़े	34
	35	सारे तीर्थ धाम	35
	36	श्वांसों की माला	36
	37	शुक्र साहिबा तेरा	37
	38	चाहे संत कहो	38
	39	इतनी मेहर करना	39
(ग)	40	पायो जी मैने	40
	41	ईबादत करने दे	40
	42	मेरे साहिबा नहीं हैं दूर	41
	43	तुझ बिन मुझको	42
	44	मोहे साहिब मिलन	42
	45	सांसों की माला	43
	46	ओ मेरे साहिबा	44
	47	मेरे साहिबा मेरे विधाता	44

	क्रम	भजन	पृष्ठ
	48	मेरे तो साहिब सतगुरू	45
	49	साहिब जी मैं मेघा	46
	50	साहिब मेरे तुझ संग	47
	51	मैं नादान मैं अन्जान	47
	52	ये झूठा संसार	48
	53	साहिब तेरे प्रेम से	49
	54	साहिब जी तुम जो	51
	55	हम तो हंसा सतलोक के	52
	56	मेरे साहिब पधारे हैं	53
	57	तुझे क्या सुनाऊँ	54
	58	सोई पड़ी थी	55
	59	तेरा तुझको सौंप के	56
	60	मेरे साहिबा ओ मेरे साहिबा	57
	61	मेरे गुरू प्यारे	58
	62	साहिब मेरे मैं पाऊँ	59
	63	साहिब जी बड़ती प्रीत	59
	64	साहिब जी तेरे पथ पे	60
	65	ख़ाक में मिल जाओगे	62
	66	साहिब जी ईन्सान तो	63
(घ)	67	सांचा नाम सांचा नाम	64
	68	साहिब सतपुरूष मेरे	65
	69	मेरा साहिब संग निभाये	65
	70	साहिब सतनाम उच्चारे	66
	71	जमना मरना काल	67
	72	क्या महिमां क्या महिमां	68
	73	साहिब के हम बच्चे	70
	74	मैनें पूर्ण सतगुरू	71

क्रम	भजन	पृष्ठ
75	छोड़ दे बंदे 'मै' मेरी नूं	72
76	मेरे साहिबा प्रीतम प्यारा	73
77	मेरे साहिबा हैं भव पार	74
78	मंदिर मस्जिद गिरजे	75
79	सतगुरू तेरे चरणों में	76
80	जित देखूं तूं ही तूं	77
81	साहिब सूं प्रीती करूं	78
82	छोड़ दे बंदे तेरी मेरी	79
83	तुम बिन हम अधूरे	80
84	सब फंसे माया के जाल	81
85	अकड़ के चलने वाले	82
86	सब्द बिन भूला फिरे	83
87	सदा सुखों को चाहने वाले	85
88	इतनी मेहर करना मेरे साहिबा	86
89	तूं पानी में मल मल नहावे	87
90	मैनें अपनी मै को तज कर	88
91	जग भूला निज रूप को	89
92	हे मायाधारी आत्म रे	90
93	जग जीवो प्यारो	93
94	सतगुरू सुरति रंग	94
95	प्रेमी बन कर प्रेम में	95
96	ओ बंदेया तुकि समझ	96
97	महांकाल के पंझे से	98
98	जग मिथ्या ईक झूठा सपना	99
99	सब्द सुरति सूं ध्या ले प्यारे	100
100	मैं मेरी में जीने वाले	102
101	ओ बंदया–कोई वी तेरा	103